श्री स्वामिनी जू सभा

सर्वदेव वन्दिता भगवती श्रीसीताजी

नीलाम्भोजदलाभिरामनयनां नीलाम्बरालङ्कृतां गौराङ्गीं शरदिन्दुसुन्दरमुखीं विस्मेरबिम्बाधराम् ।
कारुण्यामृतवर्षिणीं हरिहरब्रह्मादिभिर्वन्दितां ध्यायेत् सर्वजनेप्सितार्थफलदां रामप्रियां जानकीम् ॥

श्रीसीता-स्तोत्र सुधा-सागरः—

श्रीजानकीवल्लभ दुलहा भगवान् की झाँकी, श्रीजनकपुर धाम ।

रराजरसघनविग्रह रसिकानामतिप्रियतमश्चाऽसौ ।यं वदन्ति रसमुग्धा दुलहाभगवान्निति प्रेम्णा ॥

"श्रीरामानन्द-साहित्य माला" पुष्प ७२ वाँ

श्रीसीतातत्त्वमुपास्महे

श्रीसीतास्तोत्र सुधासागरः
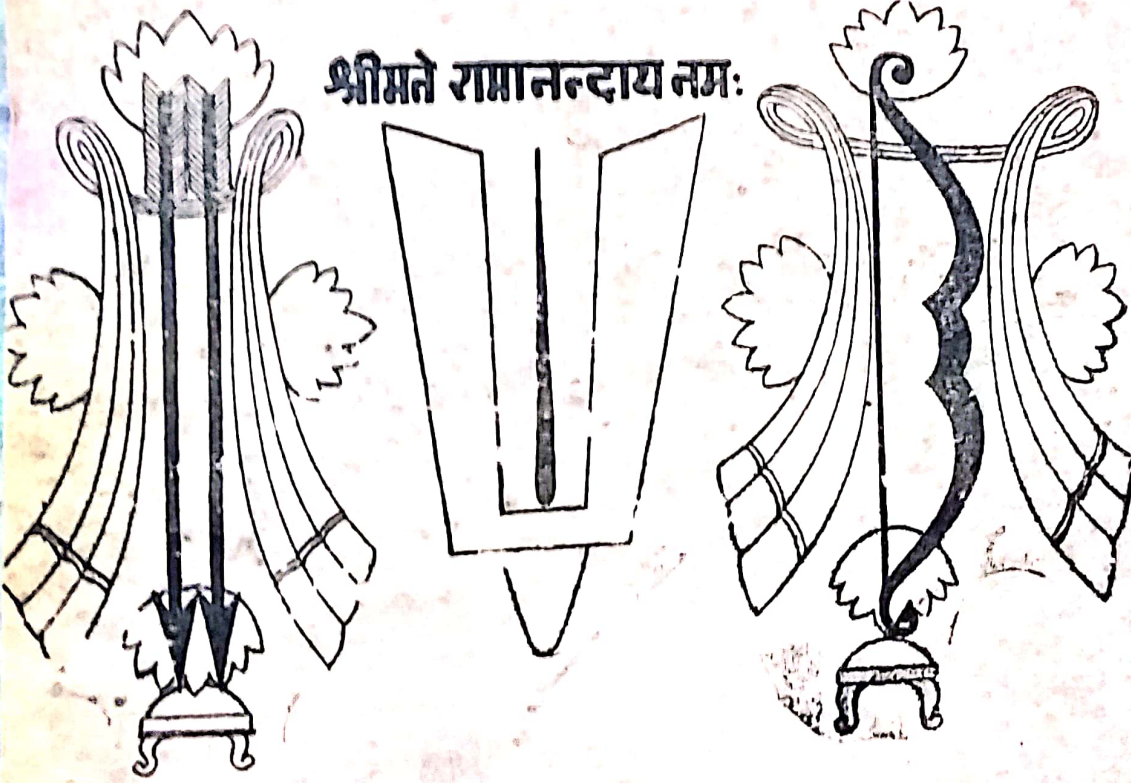
सम्पादक—

अवधकिशोरदास श्रीवैष्णव

"प्रेमनिधि"

-: श्रीजानकी त्रैलोक्य विजयकवचम् :-

ॐ अस्य श्रीजानकी देव्याः कवचं लोक दुर्लभम् । तवस्नेहात्प्रवक्ष्यामि सर्वसाराख्यमुत्तमम् ॥
जगद्धात्री महाशक्तिर्महामायेति जानकी । तस्याः कवच विप्रेन्द्र कः क्षमो गुणवर्णने ॥
कवचं जानकी देव्यास्त्रैलोक्य विजयप्रदम् । यस्य प्रपठनान्मर्त्यस्त्रैलोक्य विजयी भवेत् ॥
पठनाच्छ्रवणाधस्य ब्रह्मा विष्णु शिवादयः । विश्वोद्भवलयादीनां शक्तिमन्तो भवन्त्यपि ॥
ध्यानं तस्याः प्रवक्ष्यामि सर्वेषां मुक्तिदायकम् । दुर्लभं चैव विबुधां सर्वदा शंकर प्रियम् ॥

अथध्यानम्—

सर्वशक्ति मयीं सीतां द्विभुजां सुस्मिताननाम् । गौरवर्णां विशालाक्षीं नीलवस्त्र धरां पराम् ॥
रक्तभूषण संयुक्तां रत्नरत्नोप शोभिताम् । सगुणां निर्गुणां चैव महामाधुर्य सान्विताम् ॥
गोलोकमण्डले रम्ये सन्तानक वनान्तरे । सखिभिः कोटिभिर्युक्तां रत्नसिंहासनस्थिताम् ॥
कोटिसूर्यप्रतिकाशां सच्चिदानन्द विग्रहाम् । परिपूर्णतमां शक्ति प्रभामण्डल मण्डिताम् ॥
सर्वेषां बीजरूपां च योगीन्द्रैरभि वन्दिताम् । श्रीरामवल्लभां सीतां चिन्तयेद्भक्त वत्सलाम् ॥

ॐ अस्य श्रीजानकी कवचस्य ब्रह्माऋषिः अनुष्टुप् छन्दः ।
श्रीजानकी आह्लादिनी शक्तिर्देवता सर्वकार्य सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ॥११॥

ॐ जानकी मे शिरःपातु भालंजनकनन्दिनी । नेत्रयुग्मं च वैदेही श्रोत्रयुग्मं वरानना ॥
सीता मे च मुखं पातु स्कंधौ पातु हरिप्रिया । हृदयं मे जगद्धात्री नाभीं मे रामवल्लभा ॥
महामाया कटिं पातु जानुनी धरणी सुता । पादयुग्मं सदापातु रक्ष कुल विनाशिनी ॥
पूर्वे तु मां सदा पातु राघवेन्द्रप्रियासखी । मूलप्रकृतिर्याम्यां च प्रतीच्यां सर्व वन्दिता ॥
सर्वशक्ति स्वरूपा च कौवेर्यां परिरक्षतु । इदं हि सर्वसाराख्यं जानक्याः कवचंपरम् ॥
भुक्ति मुक्ति प्रदातारं देवानामपि दुर्लभम् । मन्त्राणां बीजरूपश्च बीजानां बीजमव्ययम् ॥
पावनं पावनानां च सर्व पापौघनाशनम् । सर्वाभीष्टप्रदं चैव सर्वारिष्ट निवारणम् ॥
सिद्धिदः साधकानां हि सर्वेषामर्थ दायकम् । श्रीरामचरणाम्भोजे दृढ़ भक्ति प्रदं शुभम् ॥
यः पठेद्धारयेन्नित्यं सदा सर्वगतः सुखी । सीता तस्य गृहंत्यक्त्वा नैव याति कदाचन ॥
विलिख्य भूर्यपत्रे च स्वर्णारथं धारयेद्यदि । कवचस्य प्रसादेन जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥
जानक्याः कवचं नित्यं यः पठेद्वैष्णवोत्तमः । सर्वपाप विनिर्मुक्तो ब्रह्मानन्द सुखं लभेत् ॥

सर्वशक्तिमयी सीता गुणातीता चिदात्मिका । निमिषार्द्धे जगत्सर्वं करोति विकरोति च ॥
ईशानी सर्वजीवानां ब्रह्माणी ब्रह्ममन्दिरे । विष्णु गृहे च लक्ष्मी स्यात् पार्वती शंकरप्रिया ॥
माहेश्वरी पराशक्ति योगमायेति जानकी । नाना रूपधरा सीता क्रीडते रामसन्निधौ ॥
तस्यास्तु जानकी देव्याः कवचं देवि गोपितम् । गुह्याद्गुह्यतरं सारं न वक्तव्यं कदाचन ॥
यन्मया सर्वसाराख्यं तव स्नेहात्प्रकाशितम् । यस्मै कस्मै न दातव्यं प्राणात्प्रियतमं मम ॥

॥ इति श्रीब्रह्म सँहितायां श्रीजानकी कवचं सम्पूर्णम् ॥ श्रीः-श्रीं-श्रीं ॥

॥ श्रीजानकी त्रैलोक्य विजय कवचम् ॥

अब मैं त्रैलोक्य दुर्लभ सर्व शास्त्रों के सार स्वरूप सर्वोत्तम श्रीजानकी देवी के कवच को आपके प्रति स्नेह होने के कारण कथन करता हूं ॥ १ ॥ हे विप्रेन्द्र ! जगदम्बा-महाशक्ति महामाया-श्री जानकी जी हैं । उनके कवच के गुणों का वर्णन करने कौन में समर्थ हो सकता है ? ॥ २ ॥ श्री जानकी देवी के "त्रैलोक्य विजय प्रद" इस कवच का पाठ करने से मनुष्य तीनों लोक में विजय-आनन्द प्राप्त करता है ॥ ३ ॥ जिसके पठन पाठन श्रवण करने से ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरादि त्रिदेव संसार के उद्भव-पालन-प्रलय करने की शक्ति से सम्पन्न होते हैं ॥ ४ ॥ इन श्री जानकी जी का सबको मुक्ति प्रदायक तथा शङ्कर जी का परम प्रिय देवताओं को भी दुर्लभ ऐसा ध्यान मैं वर्णन करता हूँ ॥ ५ ॥

अथ ध्यानम् :—

सर्व शक्ति परिपूर्ण दो भुजा लाली-मन्द-मन्द मधुर मुसक्याती हुई-गौरवर्णी-विशाल नेत्रों वाली-नील साड़ी धारण किये श्री सीता जी का ध्यान करे ॥ ६ ॥ लालरङ्ग के विभूषण पहरे हुए रत्नों की शोभा बढ़ाने वाली महारत्न रूपा-सगुणा-निर्गुणा तथा महा माधुर्य सम्पन्ना ॥ ७ ॥ गोलोक मण्डल के मध्य में-सन्तानक वन में-करोड़ों सखियों से संयुक्त-रत्नसिंहासन पर विरा मान ॥ ८ ॥ करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाश वाली सच्चिदानन्द विग्रहा-परात्परा पूर्ण शक्ति, अनन्त प्रभा मण्डल मण्डिता ॥ ९ ॥ सभी की बीज स्वरूपा (कारण) योगीन्द्रों के द्वारा अभिवन्दित-भक्तवत्सला-श्रीरामवल्लभा-श्रीसीताजी का ध्यान करना चाहिए ॥ १० ॥

इस श्रीजानकी कवच के ब्रह्माजी ऋषि हैं, अनुष्टुप छन्द है, आहलादिनी पराशक्ति श्री जानकी जी देवता हैं सर्व कार्य सिद्धि प्राप्त करने के लिये इसका विनियोग है ॥ ११ ॥ मेरे शिर की रक्षा श्री जानकी जी करें, भाल की जनक नन्दिनी-दोनों नेत्रों की वैदेही· दोनों कानों की, श्रेष्ठ मुख वाली (वरानना) मेरे मुख की श्रीसीताजी रक्षा करे, दोनों स्कन्धों की हरिप्रिया-जगद्धात्री हृदय की-मेरे नाभि की रामवल्लभा-महामाया कटि की रक्षा करें । दोनों घुटनों की धरणी सुता तथा राक्षस कुल की विनाशिनी मेरे दोनों पार्श्वों की रक्षा करें ॥१२-१३-१४ ॥ श्री राघवेन्द्र की प्रिया सखी मेरी पूर्व में रक्षा करें । दक्षिण में मूल प्रकृति, सर्ववन्दिता

पश्चिम में ॥ १५ ॥ तथा उत्तर दिशा में सर्व शक्ति स्वरूपा सर्व प्रकार से रक्षा करें। यह सर्व तन्त्रों का सार स्वरूप श्री जानकी जी का परम श्रेष्ठ कवच है॥ १६ ॥ भुक्ति-मुक्ति प्रदान करने वाला-देवताओं को भी दुर्लभ है। सभी मन्त्रों का बीज (प्राण) स्वरूप, बीजों का भी अव्यय बीज है ॥ १७ ॥ पवित्रों में परम पवित्र सर्व पाप समूहों को नष्ट करने वाला-सभी अभीष्ट फल प्रद-सभी दुखों का निवारण करने वाला है ॥ १८ ॥ साधकों को सर्वसिद्धि दाता, सभी को मनोरथ पूर्ण करने वाला तथा श्रीराम चरणारविन्द में परम शुभ दृढ़ भक्ति प्रदान करने वाला है ॥ १९ ॥ जो सदा इसका पाठ करता है अथवा धारण करता है, वह सदैव जहाँ जाता है वहीं परम सुखी रहता है। श्री सीता जी उसके घर को त्याग कर अन्यत्र कभी कहीं नहीं जाती हैं ॥ २० ॥ भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर स्वर्ण के यन्त्र में यदि इसको धारण करता है तो कवच की कृपा से वह मनुष्य जीवन मुक्त हो जाता है ॥ २१ ॥ इस श्री जानकी कवच का उत्तम वैष्णव पुरुष नित्य पाठ करता है वो वह समस्त पापों से विमुक्त होकर ब्रह्मानन्द का सुख प्राप्त करता है ॥ २२ ॥ श्रीसीता सर्व शक्तिमयी है, चिदात्मिका है। आधे निमेष में ही संसार को बनाना तथा प्रलय कर देना इनका कौतुक है ॥ २३ ॥ सम्पूर्ण जीवों की ईश्वरी हैं, ब्रह्म मन्दिर में ब्रह्मा जी हैं, विष्णु मन्दिर में श्रीलक्ष्मी हैं, शिव मन्दिर में पार्वती हैं ॥ २४ ॥ ये महेश्वरी-पराशक्ति-योगमाया-जानकी आदि नाना रूप धारण करतीं हैं तथा श्रीराम के साथ सीता स्वरूप से क्रीड़ा करतीं हैं ॥ २५ ॥ श्रीजानकी देवी का यह कवच गुप्तों में भी महान् गुप्त हैं, यह सबको नहीं कहना चाहिये ॥२६॥ सर्व तन्त्रों का सार स्वरूप जो मैंने यह आपके स्नेह से प्रकाशित किया है यह मुझे प्राणों से अधिक प्रिय है या जिसको तिसको कभी देने योग्य नहीं हैं ॥ २७ ॥

"यह श्री ब्रह्म संहीता का 'श्रीजानकीत्रैलोक्यविजयकवच' सम्पूर्ण हुआ।"

श्रीं श्रीं श्रीं ॥

—:ॐ:—

"नमस्याऽवनिसुता"

जगच्छायामावामा नयन सुखधामा हरि रमा-
महालक्ष्मीर्नित्यं परिचरति यत्पाद जलजम्।
दया पारावारो भवति बहुधारो निज जने-
सदा यस्याः सा मे प्रभवतु नमस्याऽवनिसुता ॥

—स्तुति कुसुमाञ्जलि

—ॐ—

ॐ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॐ

॥ अथ श्रीजानकी कवचम् ॥

॥ धरण्युवाच ॥

देव देव कृपासिन्धो कथयानुग्रहान्मयि । श्रीसीता कवचं दिव्यं सर्वपाप भयापहम् ।

॥ श्रीशेष उवाच ॥

शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि गुह्यानां गुह्यमुत्तमम् । सीतायाः कवचं पुण्यं पठतां पापनाशनम् ॥

ध्यात्वा चम्पक दामाभां कोमलाङ्घ्रि सरोरुहाम् । बालातपाभवसनां करभप्रतिमोरुकाम्॥

पूर्णचन्द्राभवदनां नीलकुञ्चित कुन्तलाम् । मणिकङ्कण सौन्दर्यं विलसत्कर पल्लवाम् ॥

सर्वसद्गुण सम्पन्नां हेमकुम्भ लसत्कुचाम् । आजानु विन्यस्तभुजां करपद्म धृताम्बुजाम् ॥

किरीट हार केयूर मुक्ता भूषण भूषिताम् । रत्नसिंहासनगतां देवस्त्रीगण सेविताम् ॥

श्रीरामवाम भागस्थां तप्तचामीकर प्रभाम् । सीतां ततः पठेत्पुण्यं कवचं पापनाशनम् ॥

श्रीसीताकवचस्यास्य शेष ऋषि रुदाहृतः । बीजंवाग् अनुष्टुप्छन्दो देवता जनकात्मजा ॥

सीता रक्षेत्तु मूर्द्धानं नयने जानकी मम । श्रीरामचन्द्रदयिता कपोलौ पातु सर्वदा ॥

कण्ठं मे पातु वैदेही हृदयं राघवप्रिया । करौ विदेहतनया पार्श्वं भूमिसुता मम ॥

उदरं पातु कौशल्यातनय प्रेयसी सदा । उरू रक्षतु वैदेही जानुनी जनकोद्भवा ॥

पादौरक्षतु मे नित्यं रामपत्नी दृढ़व्रता । देवी पातु च सर्वाङ्गं मम पङ्कज लोचना ॥

दैत्य दानव भूतेभ्यः पातु मां राघवप्रिया । राजरोगभयेभ्यो मां पातु पङ्कज धारिणी ॥

प्रयाणकाले सीतायाः यः पठेत्कवचं परम् । मुच्यते सर्वपापेभ्यो निर्वाणमपि गच्छति ॥

अश्वमेधायुत फलं पठनाल्लभते नरः । नित्य पठति भक्त्या यः तस्य सीता प्रसीदति ॥

राज्यलाभो भवेत्तस्य रामभक्तिश्च पुष्कला । इतीदं कवचं पुण्यं प्रातःसायं पठेन्नरः ॥

तस्य भक्ति समृद्धिः स्यादायुः कीर्तिश्चवर्द्धते । प्रसन्नो रामचन्द्रश्च भवेदिह न संशयः ॥

श्रीं सीतायै स्वाहा ॥ श्रीं सीतायै नमः ॥ इतिमन्त्रः ॥

अथ ध्यानम्—

अरुणारविन्द चरणां समुल्लसत्तरुणार्कबिम्ब कमनीय कुण्डलाम् ।

मिथिलाधिपस्य तनयामुपास्महे करुणां विदेह विमलोत्पलेक्षणाम् ॥१८॥

॥ इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे धरणी शेष सम्वादे जानकी कवचम् सम्पूर्णम् ॥

—: श्री जानकी कवचम् :—

श्री पृथिवी ने प्रार्थना की:—

हे देव देव ! हे करुणा सागर ! यदि आपका मुझ पर पूर्ण अनुग्रह है तो सर्व पाप तथा भय का हरण करने वाला श्री सीता जी के दिव्य कवच का आप कथन करिये ॥ १ ॥

श्री शेषनारायण ने कहा:—

हे देवि ! गुप्तों में गुप्त रहस्य, उत्तमों में परमोत्तम, पाठ करने वालों का पाप नष्ट करने वाला परम पावन श्री सीता जी के कवच का मैं वर्णन करता हूं उसको आप सुनिये ॥ २ ॥

अथ ध्यानम्:—

जो चम्पा के पुष्प के समान गौराङ्गी हैं, जिनके चरण कमल पुष्प के समान सुन्दर तथा कोमल हैं, बाल सूर्य के समान अरुण वस्त्र जिन्होंने ने धारण किये हैं, हाथी की सुण्ड के समान जिनके उरू हैं, पूर्ण चन्द्र के समान जिनका मुखचन्द्र है, घुंघुरारे काले चिकने केश हैं, मणि जटित मनोहर कङ्कण से शोभायमान जिनके सुन्दर कर कमल है, सर्व सद्गुण वात्सल्य रसपूर्ण हेम कलश के समान जिनके स्थन हैं, आजानु पर्यन्त लम्बी भुजायें हैं, कर कमल में कमल का पुष्प सुशोभित है, चन्द्रिका किरीट-हार-केयूर-आदि मुक्तामणि जटित भूषणों से विभूषित हैं। रत्नसिंहासन पर विराजमान हैं, देवाङ्गनायें सेवा कर रही हैं, श्रीराम जी के बायीं ओर विराजी हैं, तपे हुए स्वर्ण के समान ज्योतिर्मय-प्रभा कान्ति अङ्ग अङ्ग से छिटक रही हैं, ऐसी श्री सीता जी का ध्यान करके तब सर्व पाप नाशक इस श्री सीता कवच का पाठ करे ॥ ३-४-५-६-७ ॥

तब सङ्कल्प करे-सङ्कल्प का अर्थ यह है:—

इस श्री सीता कवच के श्रीशेष ऋषि हैं, वाग् बीज है, अनुष्टुप् छन्द है, श्री जानकी देवता हैं, श्रीसीता कृपा प्राप्ति विनियोग है ॥ ८-९ ॥

श्रीसीता मेरे शिर की रक्षा करें-श्रीजानकीजी मेरे नेत्रों की रक्षा करें, श्रीरामचन्द्र दयिता सदैव मेरे कपोलों की रक्षा करें, श्री राघवप्रिया मेरे हृदय की रक्षा करें, विदेह तनया हाथों की, भूमिसुता मेरे पार्श्व (पखुड़ों) की, कौशल्या नन्दन प्रिया मेरे उदर की सदैव रक्षा करें। वैदेही मेरे उरू (जंघा) की रक्षा करे, जनकलली मेरे जानु (घुंटनों) की रक्षा करें। दृढ़ पतिव्रता श्रीराम पत्नी मेरे पांवों की रक्षा करें। कमल लोचना देवी मेरे सर्वाङ्ग की रक्षा करें। दैत्य-दानवों के भय से कमल धारिणी मेरी रक्षा करें ॥ १०-११-१२-१३ ॥

प्रयाण काल में प्रस्थान करते समय जो यह परमोत्तम श्रीसीता कवच का पाठ करता है वह सभी पापों से मुक्त होकर मोक्ष धाम प्राप्त करता है। इसका पाठ करने से दश हजार अश्वमेधों के पुण्य को मनुष्य प्राप्त करता है। जो नित्य इसका भक्ति पूर्वक पाठ करता है

उस पर श्री जानकी जी प्रसन्न होकर कृपा करती हैं। जीवन में राज सुख भोगता है। श्री रामजी के चरणों में अत्यन्त प्रीति होती है। इस प्रकार इस पवित्र कवच का प्रातः सायं जो कोई पाठ करता है उसको—भक्ति–समृद्धि–आयु तथा कीर्ति की वृद्धि होती है तथा भगवान् श्री रामचन्द्र जी प्रसन्न हो जाते हैं, इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है ।। १४–१५–१६–१७ ।।

।। श्रीं सीतायै स्वाहा—श्रीं सीतायै नमः ।।

लाल लाल अरुणारे जिनके चरणारविन्द हैं, तरुण सूर्य के समान कमनीय कुण्डल जिनके कानों में सुशोभित है, जिनके निर्मल कमल नयनों से करुणामृत की धारा प्रवाहित हो रही है। ऐसी श्री मिथिलेश राजदुलारी जू की हम सदैव उपासना करते है ।।

"इस प्रकार—ब्रह्माण्ड पुराण के धरणी–शेष सम्वाद स्वरूप श्री जानकी कवच सम्पूर्ण हुआ।"

अथ श्रीजानकी रक्षा कवचम्

श्रीजानक्या जगन्मातुः रक्षाकवचमुत्तमम्। सर्वरक्षाकरं दिव्यं श्रूयतां सर्वसौख्यदम् ।।
ॐ ईशान्यामीश्वरी पातु आग्नेयामतुलप्रभा। नित्यानन्दा तु नैऋर्त्यां वायव्यां भक्तवत्सला ।।
पूर्वे परमेश्वरी पातु दक्षिणे तु दयार्णवा। पश्चिमे पुण्यश्लोका च उत्तरे उर्विजा सदा ।।
ऊर्ध्वे उद्यच्छतार्का च अधस्तादघहारिणी। श्रीसीता सर्वतः पातु सदा श्रीरामवल्लभा ।।
रक्षाकवचमेतत्तु श्रीजानक्यामुदाहृतम्। यः पठेत्परया भक्त्या स रक्षितश्च सर्वदा ।।

।। इति श्रीप्रेमतन्त्रोक्तं श्रीजानकी रक्षा कवचं सम्पूर्णम् ।।

।। श्रीजानकी रक्षा कवचम् ।।

जगन्माता श्री जानकी जी का यह रक्षा कवच परमोत्तम है परमदिव्य है तथा जो सर्व प्रकारेण रक्षा करने वाला है। उस सर्व सुख प्रदायक कवच का श्रवण करो ।। १ ।। ईश्वरी ईशान कोण में रक्षा करें। अतुल प्रभावा अग्नि कोण में, नित्यानन्दा नैऋर्त्य में, भक्तवत्सला वायव्य में मेरी सदैव रक्षा करें ।। २ ।। परमेश्वरी पूर्व में तथा दया सागरी दक्षिण में मेरी रक्षा करें। पुण्य श्लोका पश्चिम में तथा उर्विजा देवी उत्तर में मेरी रक्षा करें ।। ३ ।। उदय काल में प्रकाशित सैकड़ों सूर्यों के समान तेजस्वी ऊर्ध्व में, तथा अघहारिणी अधः लोक में मेरी रक्षा करें। श्रीरामवल्लभा श्रीसीता सदा सर्वदा सर्वत्र मेरी रक्षा करें ।। ४ ।। श्री जानकी जी का यह रक्षा कवच मैंने वर्णन करके कहा है। इसका जो परम भक्ति पूर्वक पाठ करता है वह सदा सर्वदा सर्वत्र सुरक्षित रहता है ।। ५ ।।

"यह प्रेमतन्त्रोक्त श्रीजानकी रक्षा कवच सम्पूर्ण हुआ।"

।। अथ श्रीसीता रक्षा कवचम् ।।

सर्वेश्वरीं सर्वमुनीन्द्र वन्दितां, मुक्तिप्रदां संसृति विघ्न हारिणीम् ।
साकेत सिंहासनमध्यसंस्थां नमामि सीतां सकलेष्ट कामदाम् ।।१।।

श्रीसीता मे शिरः पातु ललाटं जानकी सदा । सत्य श्रीनेत्रयुगलं कर्णौ त्रैलोक्य स्वामिनी ॥
नासिकां नित्यकैशोरी, भ्रूयुगं योगिवन्दिता । ओष्ठौ पातु सुधास्निग्धो, दन्तान्देवेन्द्र पूजिता ॥
चिबुकं चन्द्रमुखीपातु, जिह्वां श्रीरामवल्लभा । गण्डं पातु पराशक्तिः, कण्ठंक्रीडाविनोदिनी ॥
हृदयं राघवप्राणा, करौ कमल लोचना । उदरं भूसुता पातु, कटिं मंगल विग्रहा ॥
जनुदेशं जगद्धात्री, पादौ प्रणत पालिका । नखान्नित्य नवा पातु, पूर्णापाद तलं तथा ॥
पृष्ठं पुण्यप्रदा पातु, संकटे संयुगेश्वरी । सर्वत्र सर्वदा पातु, प्रमोद विपिनेश्वरी ॥
प्रातः पातु परानन्दा, मध्याह्ने माधवीश्वरी । सायाह्ने शक्तिमूलाश्च, रात्रौरामाभिनंदिनी ॥
इतीदं कवचं दिव्ये, सर्व रक्षाकरं परम् । तस्य सर्वार्थ सिद्धिः स्यात्, प्रातर्नित्यं पठेद्यदि ॥

।। इति श्रीसीता रक्षाकवचं सम्पूर्णम् ।।

सदानुग्रह सम्पन्ने श्रीमन्त्रार्थैक विग्रहे । कोशलेन्द्र प्रिये देवि ! रक्ष मां शरणागतम् ।।

।। श्रीसीता रक्षा कवचम् ।।

सकल महामुनीन्द्र वन्दिता-मुक्ति प्रदात्री सर्वेश्वरी-संसार के सभी विघ्नों को हरण करने वाली, सकल अभीष्ट मनोरथों को पूर्ण करने वाली, साकेत सिंहासन के मध्य विराजमान श्रीसीताजी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

श्री सीता जी मेरे शिर की रक्षा करें, ललाट की श्री जानकी जी; सत्य स्वरूपा श्री मेरे युगल नेत्रों की, त्रैलोक्य स्वामिनी मेरे कानों की, नित्य किशोरी मेरी नासिका की, योग-वन्दिता मेरे युगल भौंहों की, तथा सुधास्निग्धा मेरे दोनों ओठों की रक्षा करें। देवेन्द्र वन्दिता मेरे दाँतों की चन्द्रमुखी मेरे चिबुक (ठोढ़ी) की, श्रीरामवल्लभा मेरी जीभ की, पराशक्ति मेरे गालों की रक्षा करें । क्रीड़ा विनोदिनी मेरे कण्ठ की, राघव प्राणा मेरे हृदय की, कमल लोचना मेरे करों की, तथा उदर की रक्षा भूमि पुत्री करें । मङ्गल विग्रहा कटि की, जगद्धात्री जानु प्रदेश की, प्रणत पालिका पांवों की, नित्य नवीना नखों की तथा पूर्णा मेरे पादतल की रक्षा करें । पुण्य प्रदा मेरे पीठ की रक्षा करें । संयुगेश्वरी संकट समय में तथा प्रमोद विपिनेश्वरी सदा सर्वदा सर्वत्र मेरी रक्षा करें । प्रातः काल परानन्दा तथा मध्यान्ह में माधवेश्वरी मेरी रक्षा करें । सभी शक्तियों की मूल सायंकाल में तथा श्रीरामाभिनन्दिनी रात्रि में मेरी रक्षा करें ॥ २-३-४-५-६-७-८ ॥

यह दिव्य कवच सर्व रक्षा करने वाला परात्पर है । इसका प्रातः काल में यदि कोई नित्य पाठ करे तो उसको सर्व सिद्धियां प्राप्त होती हैं ॥ ९ ॥

"यह श्रीसीता रक्षा कवच सम्पूर्ण हुआ ।"

अथ श्रीसीता कवच प्रारम्भ

श्रृणु शिष्य प्रवक्ष्यामि सीतायाः कवचं शुभम् । पुरा प्रोक्तं सुतीक्ष्णाय यद्रम्यं कुम्भजन्मना ॥
एकदा कुंभ जन्मानं सुतीक्ष्ण प्राह वै मुनि । रहःस्थितं गुरुं दृष्ट्वा प्रणम्य भक्तिपूर्वकम् ॥

श्रीसुतीक्ष्ण उवाच—

गुरोऽहं श्रोतुमिच्छामि सीतायाःप्रीतिदानि हि । यानि स्तोत्राणिकर्माणि तानित्वं वक्तुमर्हसि ॥

श्रीअगस्तिरुवाच—

सम्यक् पृष्टं त्वया वत्स सावधान मनाःश्रृणु । आदौ वक्ष्याम्यहं रम्यं सीतायाः कवचं शुभम् ॥
या सीतावनि संभवाथ मिथिलापालेन संवर्द्धिता, पद्माक्षनृपतेः सुतानलगता या मातुलिंगोद्भवा॥
या रत्नेलयमागता जलनिधौ या वेदपारंगता, लंका सा मृगलोचना शशिमुखीमांपातु रामप्रिया॥

ॐ अस्य श्रीसीताकवच स्तोत्र मंत्रस्य ॥ अगस्ति ऋषिः ॥ श्रीसीता देवता ॥ अनुष्टुप् छन्दः ॥ रमेति बीजम् ॥ जनकजेति शक्तिः ॥ अवनिजेतिकीलकम् ॥ पद्माक्ष सुतेत्यस्त्रम् ॥ मातुलिंगीति कवचम् ॥ मूलकासुरघातिनी मन्त्रः ॥ श्रीसीतारामचन्द्र प्रीत्यर्थं सकलकामना सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ॥ अथ अंगुलीन्यासः ॐ ह्रां सीतायै अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं रमायै तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रूं जनकजायै मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रैं अवनिजायै अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रौं पद्माक्षसुतायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रः मातुलिङ्गियै नमः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः एवं हृदयाद्यंग न्यासः कार्यः ॥

अथ ध्यानम्—

सीतां कमलपत्राक्षीं विद्युत्पुञ्ज समप्रभाम् । द्विभुजां सुकुमारांगीं पीत कौशेय वासिनीम् ॥६॥
सिंहासने रामचन्द्र वामभागस्थितां वराम् । नानालंकार संयुक्तां कुंडलद्वय धारिणीम् ॥७॥
चुड़ा कंकण केयूर रसना नूपुरान्विताम् । सीमंते रविचन्द्राभ्यां निटिले तिलकेन च ॥८॥
मयूराभरणेनापि घ्राणेऽति शोभितांशुभाम् । हरिद्रां कज्जलंदिव्यं कुंकुमं कुसुमानि च ॥९॥
बिभ्रतीं सुरभिद्रव्यं सुगन्धस्नेहमुत्तमम् । स्मितानना गौरवर्णां मन्दार कुसुमं करे ॥१०॥
बिभ्रतीमपरे हस्ते मातुलिंगमनुत्तमम् । रम्य हासां च बिम्बोष्ठीं चन्द्रवाहन लोचनाम् ॥११॥
कलानाथ समानास्यां कलकंठ मनोरमाम् । मातुलिंगोद्भवां देवीं पद्माक्ष दुहितां शुभाम् ॥१२॥
मैथिलीं रामदयितां दासीभिः परिवीजिताम् । एवं ध्यात्वा जनकजां हेमकुम्भ पयोधराम् ॥१३॥

सीतायाः कवचं दिव्यं पठनीयं शुभावहम् ॥१४॥

श्रीसीता पूर्वतःपातु दक्षिणेऽवतु जानकी । प्रतीच्यां पातु वैदेही पातूदीच्यां च मैथिली ॥१५॥

अधः पातु मातुलिंगी ऊर्ध्वं पद्माक्षजावतु । मध्येऽवनिसुता पातु सर्वतः पातु मां रमा ॥१६॥

स्मितानना शिरः पातु पातु भालं नृपात्मजा । पद्मावतु भ्रुवोर्मध्ये मृगाक्षी नयनेऽवतु ॥१७॥

कपोले कर्णमूले च पातु श्रीरामवल्लभा । नासाग्रं सात्विकीपातु पातु वक्त्रं तु राजसी ॥१८॥

तामसी पातु मद्वाणीं पातु जिह्वां पतिव्रता । दन्तान् पातु महामाया चिबुकं कनकप्रभा ॥१९॥

पातु कंठं सौम्यरूपा स्कंधौ पातु सुरार्चिता । भुजौ पातु वरारोहा करौ कंकण मंडिता ॥२०॥

नखान् रक्तनखा पातु कुक्षौ पातु लघूदरा । वक्षः पातु रामपत्नी पार्श्वे रावण मोहिनी ॥२१॥

पृष्ठ देशे वन्हिगुप्ताऽवतु मां सर्वदैव हि । दिव्यप्रदा पातु नाभिं कटिं राक्षस मोहिनी ॥२२॥

गुह्यं पातु रत्नगुप्ता लिंगं पातु हरिप्रिया । उरूरक्षतु रंभोरूर्जानुनी प्रियभाषिणी ॥२३॥

जंघे पातु सदा सुभ्रुर्गुल्फौ चामरवीजिता । पादौलवसुता पातु पात्वंगानि कुशांबिका ॥२४॥

पादांगुलीः सदापातु ममनूपुर निःस्वना । रोमाण्यवतु मे नित्यं पीत कौशेयवासिनी ॥२५॥

रात्रौ पातु कालरूपा दिने दानैक तत्परा । सर्वकालेषु मां पातु मूलकासुर घातिनी ॥२६॥

एवं सुतीक्ष्ण सीतायाः कवचं ते मयेरितम् । इदंप्रातः समुत्थाय स्नात्वा नित्यंपठेत्तु यः ॥२७॥

जानकी पूजयित्वा स सर्वान् कामानवाप्नुयात् । धनार्थी प्राप्नुयाद् द्रव्यं पुत्रार्थीपुत्रमाप्नुयात् ॥२८॥

स्त्रीकामार्थीशुभां नारीं सुखार्थी सौख्यमाप्नुयात् । अष्टवारं जपनीयं सीतायाः कवचंसदा ॥२९॥

अष्ट भूसुरसीतायै नरैः प्रीत्याऽर्पयेत्सदा । फलपुष्पादिकादीनि यानि तानि पृथक्पृथक् ॥३०॥

सीतायाः कवचं चेदंपुण्यं पातक नाशनम् । ये पठन्ति नरा भक्त्या ते धन्या मानवाभुवि ॥३१॥

॥ इति श्री आनन्दरामायणे श्रीसीता कवचं सम्पूर्णम् ॥

—:o:—

॥ श्रीसीता कवचम् ॥

श्रीरामदास कहने लगे:—हे शिष्य अब मैं सीता कवच बतलाता हूं, जिसे कि अगस्त्य जी ने सुतीक्ष्ण से कहा था ॥ १ ॥ एक बार जब कि अगस्त्य जी एकान्त में बैठे थे, सुतीक्ष्ण ने आकर भक्ति पूर्वक प्रणाम किया और कहा— हे गुरो ! मैं सीता जी को प्रसन्न करने वाले स्तोत्र और कवच सुनना चाहता हूं, सो आप कृपा करके कहिए ॥ २-३ ॥

अगस्त्य जी ने कहा:—हे वत्स ! तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया है, सावधान होकर

सुनो। पहले मैं सीताजी का कवच सुनाता हूँ ॥ ४ ॥ जो सीता पृथिवी से उत्पन्न हुईं और मिथिला नरेश के द्वारा पाली पोसी गईं, जो मातुलिङ्ग से उत्पन्न होकर पद्माक्ष नामक राजा की पुत्री कही गयीं, जो समुद्र के रत्नों में उत्पन्न हुईं और चार बार लङ्का गयीं, ऐसी चन्द्र-वदनी, मृगनयनी और राम की प्रेयसी सीता मेरी रक्षा करें ॥ ५ ॥ "अस्य श्री" से लेकर "एवं हृदयाद्यंगन्यासः" यहाँ तक विनियोग तथा अङ्गन्यास विधान बतलाया गया है। इसके बाद ध्यान है। जिसका अर्थ इस प्रकार जानना चाहिए--

कमल की पंखुड़ियो के समान जिनके नेत्र हैं, विद्युत्पुञ्ज के समान जिनकी दीप्ति हैं, जिनके दो भुजायें हैं और जो पीताम्बर पहने हैं। सिंहासन पर राम के वाम भाग में बठी हैं, कानों में कुण्डल पहने हैं, जूड़े में चूड़ामणि और भुजाओं में केयूर तथा कमर में करधनी पहने हैं, सीमन्त भाग में सूर्य-चन्द्रमा के समान आभूषण सुशोभित हो रहे हैं, माथे में तिलक लगा हुआ है, नाक में मयूर के आकार का सुन्दर आभूषण पड़ा है। हरिद्रा, काजल, कुंकुम, विविध प्रकार के फूल ॥ ६-७ ॥ तथा तरह तरह के सुगन्धित द्रव्य और इत्र आदि गमक रहे हैं, जिनका मुस्कराता हुआ मुखमण्डल है, गौर वर्ण है, एक हाथ में मन्दार का फूल लिये हैं, दूसरे हाथ में उत्तम मातुलुङ्ग विराजमान है, जिनकी मृदु मुस्कान है, बिम्ब के समान ओष्ठ है, मृग के नेत्रों के समान जिनके नेत्र हैं, चन्द्रमा के समान मुख है, कोयल के समान मीठी जिनकी वाणी है, जो मातुलुङ्ग (बिजौरा नीबू) से उत्पन्न होने वाली पद्माक्ष नृपति की पुत्री और रामकी भामिनो हैं, जिन्हें दासियां पंखे झल रहीं हैं। सुवर्ण कलश के समान स्तन हैं, ऐसी सीता का ध्यान करके सीता के इस दिव्य कवच का पाठ करना चाहिए ॥ १०-१४ ॥ पूर्व की ओर सीता रक्षा करें, दक्षिण की तरफ जानकी रक्षा करें, उत्तर की मैथिली रक्षा करें ॥ १५ ॥ नीचे भाग की मातुलुङ्गी, ऊपर पद्माक्षजा, मध्य भाग की अवनिसुता और चारों ओर रमा रक्षा करें ॥ १६ ॥ स्मितानना मुख की, नगात्मजा मस्तक की, भौंहों के बीच में पद्मा और मेरे नेत्रों की मृगाक्षी रक्षा करें ॥ १७ ॥ श्री रामचन्द्र जी की प्रेयसी कपोल और कर्णमूल की रक्षा करें। सात्त्विकी नासिका के अग्र भाग की, राजसी मुख की, तामसी वाणी की, पतिव्रता जिह्वा की, महामाया दांतों की; कनक प्रभा चिबुक की, सौम्यरूपा कण्ठ की, सुरार्चिता कन्धों की, वरारोहा बाहु की और कंकण-मण्डिता हाथों की रक्षा करें ॥ १८-२० ॥ रक्तनखा नाखूनो की, लघूदरा कुक्षिकी, राम पत्नी वक्षस्थल की; रावण मोहिनी पार्श्व भाग की और वह्नि गुप्ता सदा मेरे पृष्ठ देश की रक्षा करें। दिव्य प्रदा मेरी नाभि की और राक्षस मोहिनी कमर की रक्षा करें ॥ २१-२२ ॥ रत्न गुप्ता गुह्य की और हरिप्रिया लिङ्ग की रक्षा करें। रंभोरु मेरे दोनों घुटनों की और प्रियभाषिणी जानुकी रक्षा करें ॥२३॥ सुभ्रू जाँघों की; चामरवीजिता गुल्फ की लवपुत्र वाली पावों की तथा कुशाम्बिका शरीर के अङ्गों की रक्षा करें ॥२४॥ नूपुरनिःस्वना पैर की उङ्गलियों की और पीताम्बरधारिणी मेरे रोमों की रक्षा करें॥२५॥ रात्रि के समय कालरूपा, दिन को दानैक-

तत्परा और सब समय मूलकासुर घातिनी मेरी रक्षा करें ॥ २६ ॥ हे सुतीक्ष्ण ! इस प्रकार मैंने तुम्हें सीता कवच बतालाया। जो प्राणी सवेरे स्नान करके नित्य इसका पाठ करके जानकी जी की पूजा करता है, वह अपनी सब इच्छायें पूर्ण कर लेता है। धन को चाहने वाला धन और पुत्र की अभिलाषा रखने वाला पुत्र पाता है ॥ २७-२८ ॥ स्त्री की कामना वाला स्त्री और सुख चाहने वाला सौख्य पाता है। उपासक को चाहिए कि सदा आठ बार सीता-कवच का जप करें। आठ ब्राह्मणों को फल पुष्प आदि वस्तुयें पृथक्-पृथक् दान दे ॥२९-३० ॥ यह सीता कवच बड़ा पवित्र और पापों का नाशक है। जो लोग भक्ति पूर्वक इसका पाठ करते हैं, वे प्राणी सँसार में धन्य हैं ॥ ३१ ॥

"यह श्री आनन्द रामायणोक्त श्रीसीता कवच का पं० श्री रामतेज पाण्डेय कृत भाषानुवाद पूर्ण हुआ।"

श्रीमिथिला द्वादश नाम स्तोत्रम्

१ मिथिला २-तेरे तिर भुक्तिश्च ३-विदेह निमिकाननम् ।
४ ज्ञानक्षेत्रं ५-कृपा पीठं ६- स्वर्णलाङ्गल पद्धति ॥ १ ॥
७-जानकी जन्मभूमिश्च- ८ निरपेक्षा- ९ विकल्मषा ।
१० रामानन्दकरी-११ विश्वभाविनी-१२ नित्यमङ्गला ॥ २ ॥
इति द्वादश नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।
स प्राप्नुयाद्रघुश्रेष्ठ भुक्ति मुक्तिश्च विन्दति ॥ ३ ॥

वृहद्विष्णुपुराणीय मिथिला माहात्म्य--अ० २ श्लोक २२-२३-२४

॥ इति श्रीमिथिला द्वादशनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

❀ श्रीमिथिलायै नमः ❀

॥ श्रीमिथिला द्वादशनाम स्तोत्रम् ॥

१-मिथिला, २-तिरहुति, ३-श्रीविदेह तथा निमि महाराज के तपस्या का कानन, ४-ज्ञानक्षेत्र, ५-श्री किशोरी जी की कृपा का पीठ, ६-स्वर्ण लाङ्गल की पद्धति, ७-श्री जानकी जी की जन्मभूमि, ८-सभी से निरपेक्ष, ९-कल्मष पापों से रहित, १०-श्रीरामजी को आनन्द करने वाली, ११-विश्व का कल्याण करने वाली, १२-नित्य मङ्गल स्वरूपा, इस प्रकार के ये श्री

मिथिलाजी के द्वादश नाम का जो पाठ करता है अथवा सुनता हैं वह संसार में सुख भोग तथा अन्त में परम पद मोक्ष में श्री रघुवीर प्रभु की कृपा प्राप्त करता है ॥

"इस प्रकार बृहद्विष्णु पुराणोक्त श्रीमिथिला महात्म्य अन्तर्गत श्री मिथिला द्वादश नाम स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।

श्रीजानकी कवचरत्नम्

स्वप्ने जागरणे चाथ सुषुप्तावप्यहर्निशम्। सर्वतः सर्वदा पातु जननी जानकी सदा ॥
प्राच्यां चाथ प्रतीच्यां च पातु मां पापहारिणी। उदीच्यां भूमिजापातु याम्यां तु देवपूजिता ॥
आग्नेयां पातु हेमाङ्गी नैऋत्यां रामवल्लभा। वायव्यां वायुजाविष्टा चैशान्यां निखिलेश्वरी ॥
वामेऽग्रे दक्षिणे पृष्ठे पातु सर्वत्र मुक्तिदा। मारुतेर्वरदा पातु स्वास्थ्यं मारुति वन्दिता ॥
देहं पातु हि वैदेही मतिं पातु मतिप्रदा। सुखं तु सुषमासिन्धुः पातु कीर्तिं च कीर्तिदा ॥
वैष्णव भाष्यकार श्रीवैष्णवाचार्य निर्मितम्। पठनाद् धारणात् चास्तु कवचं विघ्न विघातकम् ॥

॥ इति श्रीजानकी कवच रत्नम् सम्पूर्णम् ॥

श्रीजानकी कवचरत्नम्

सोये में–जगते में–स्वप्न में रात दिन सर्वत्र श्री जानकी माता सदा सर्वदा रक्षा करें ॥ १ ॥ पूर्व में तथा पश्चिम में पापहारिणी मेरी रक्षा करें। उत्तर में भूमिजा रक्षा करें, दक्षिण में देवपूजिता रक्षा करें ॥ २ ॥ अग्नि कोण में हेमाङ्गी–नैऋत्य कोण में श्रीरामवल्लभा–वायव्य कोण में वायुनन्दन सहित तथा ईशान कोण में निखिलेश्वरी मेरी रक्षा करें ॥ ३ ॥ बायें–आगे–दाहिने–पीछे सर्वत्र मुक्ति प्रदा मेरी रक्षा करें। मारुति जी को वरदान देने वाली मारुति वन्दिता मेरे स्वास्थ्य की रक्षा करें ॥ ४ ॥ देह की रक्षा वैदेही करें, मति की रक्षा सुमति प्रदान करने वाली करें। सुख की सुषमा सिन्धु तथा कीर्ति की रक्षा कीर्ति प्रदायिनी करें ॥ ५ ॥ श्रीवैष्णव भाष्यकार श्री वैष्णवाचार्य निर्मित यह कवच पाठ करने से तथा धारण करने से सर्व विघ्नों का विनाश करने वाला हो ॥ ६ ॥

"इति श्रीजानकी कवच रत्न का भाषानुवाद सम्पूर्ण हुआ।"

—:※:—

❀ श्रीसीताराम चन्द्राभ्यां नमः ❀

—: अथ श्रीसीता कृपाकटाक्ष स्तोत्राम् :—

मुनीन्द्रवृन्दवन्दिते त्रिलोकशोकहारिणी, प्रसन्नवक्त्रपंकजे निकुञ्जभूविलासिनी ।
विदेहभूपनन्दिनि नृपेन्द्रसूनुसंगते, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ १ ॥

अशोकवृक्षवल्लरी वितानमण्डपस्थिते, प्रवालजालपल्लव प्रभारुणाङ्घ्रिकोमले ।
वराऽभयस्फुरत्करे प्रभूतसम्पदालये, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥ २ ॥

तडित्सुवर्णचम्पकप्रदीप्त गौरविग्रहे, मुख-प्रभापरास्त कोटि-शारदेन्दु-मण्डले ।
विचित्रचित्र संचरच्चकोर-शावलोचने; कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष-भाजनम् ॥३॥

अनङ्गरङ्गमङ्गलप्रसङ्ग भंगुर भ्रुवा, सुविभ्रमस्तु संभ्रमद् दृगन्त बाणपातनैः ।
निरन्तरं वशीकृतावधेशभूपनन्दने, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥४॥

मदोन्मदादियौवने प्रमोदमानमण्डिते, प्रियानुरागरञ्जिते कलाविलासपण्डिते ।
अनन्यधन्यकुञ्जराजि कामकेलिकोविदे, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥५॥

विशेषहावभाव धीर हीर हार भूषिते, प्रभूत शातकुम्भ-कुम्भ कुम्भिकुम्भ सुस्तनि ।
प्रशस्त मन्दहास्य चूर्ण पूर्ण सौख्यसागरे, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥६॥

मृणालवालवल्लरी तरङ्गरङ्गदोर्लते; लताग्र लास्य लोल नील लोचना विलोकने ।
ललल्लुलन् मिलन्मनोज मुग्धमोहमाश्रजे, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥७॥

सुवर्णमालिकांचिते त्रिरेख कम्बु कण्ठके, त्रिसूत्रमंगली गुणत्रिरत्न दूर दीप्यते ।
सलोल नीलकुन्तले प्रसून गुच्छ गुल्फिते, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥८॥

नितम्बविम्बलम्बमान पुष्प मेखलागुणे, प्रशस्त रत्न किंकिणी कलापमध्यमंजुले ।
करीन्द्रसुण्ड दण्डिकावरोह शोभ गोरके; कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥९॥

अनेकमन्त्रनादमंजु नूपुराखस्वले, सुराज राज-हंस-वंश निःक्वणाति गौरवे ।
विलोल हेमवल्लरी विडम्बि चारु चंक्रमे कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१०॥

अनन्तकोटि विष्णुलोक नम्रपद्मजार्चिते; हिमाद्रिजा पुलोमजा विरंचिजा वरप्रदे ।
अपार सिद्धि वृद्धि दिग्ध सत्पदांगुली नखे, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥११॥

मखेश्वरी क्रियेश्वरी स्वधेश्वरी सुरेश्वरी, त्रिवेद भारतीश्वरी प्रमाणशासनेश्वरी ।

रमेश्वरी क्षमेश्वरी प्रमोदकाननेश्वरी, विनोद काननेश्वरी विदेहजे नमोऽस्तुते ॥१२॥
इतीदमद्भुतस्तवं निशम्य भूमिनन्दिनी, करोति सन्ततंजनं कृपाकटाक्ष भाजनम् ।
भवत्यनेक संचित त्रिरूप–कर्म नाशनम्, लभेत्तथा नृपेन्द्रसूनु मंन्दिर प्रवेशनम् ॥१३॥
राकायां च नवम्यां च दशम्यां च विशुद्धधीः । एकादश्यां त्रयोदश्यां यः पठेत्साधकः सुधीः ॥
यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति साधकः । सीता कृपाकटाक्षेण भक्तिः स्यात्प्रेम लक्षणा ॥
उरुदघ्ने नाभिदघ्ने हृद्घ्ने कण्ठदघ्नके । सीताकुण्डे जलेस्थित्वा यः पठेत्साधकः शतम् ॥
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्वाक्य सामर्थ्य मेव च । ऐश्वर्यं च लभेत्साक्षाद् दृशापश्यतिजानकीम् ॥
तेन सा तत्क्षणादेव तुष्टा दत्ते महावरम् । तेन पश्यति नेत्राभ्यां तत्प्रियं श्याम सुन्दरम् ॥
नित्य लीला प्रवेशं च ददाति श्रीरघूत्तमः । अतः परतरं प्रार्थ्यं वैष्णवानां न विद्यते ॥

॥ इति श्रीसीता कृपाकटाक्ष स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

—:❀❀❀:—

❀ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ❀

॥ श्रीसीता कृपाकटाक्ष स्तोत्रम् ॥

महा मुनीश्वरों द्वारा वन्दित, त्रिभुवन के शोक का हरण करने वाली, प्रसन्न मुखार–विन्द वाली, निकुञ्ज मन्दिर में विलास करने वाली श्रीचक्रवर्ति कुमार की सङ्गिनी हे श्रीविदेह राजनन्दिनी जू आप अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र मुझे कब करेंगी ? ॥ १ ॥ अशोक वृक्ष की लताओं के वितान मण्डप में विराजमान, प्रवाल की लालिमा के समान अरुणारे कोमल चरणकमल वाली, सदैव अभय वरदान देने को जिनका कर कमल फरकता रहता है, अनन्त सम्पत्ति की महा मन्दिर हे श्री जू ! आप अपनी कृपा का पात्र मुझे कब बनावेंगी ? ॥ २ ॥ बिजली–सुवर्ण तथा चम्पा पुष्प के समान गौराङ्गी, श्री मुख की प्रभा से करोड़ों शरद् चन्द्रमा की शोभा को लज्जित करने वाली, विचित्र चित्रित वस्त्रालंकृत, चकोर बालिका के समान नेत्र वाली, हे श्री जू ! आप अपनी कृपा का पात्र हमको कब बनावेंगी ?॥३॥ मङ्गलमय अनङ्ग रङ्ग के प्रसङ्ग पर चञ्चल चोखी चितवन से अवधेश नन्दन श्रीराम को निरन्तर अपने वशीभूत करने वाली हे श्री जू ! आप आपनी कृपाकटाक्ष का पात्र हमको कब बनावेंगी ? ॥ ४ ॥ यौवन मदोन्माद से मण्डित, प्रमोद बढ़ाने वाली; मान लीला में पण्डित, प्रियतम के अनुराग को बढ़ाने वाली सरस हास विलास क्रीड़ा में परम चतुर, अनन्य प्रीति पूर्ण कामकेलि में अत्यन्त प्रवीण हे श्री जू ! आप अपनी कृपा पूर्ण कटाक्ष का पात्र हमको कब करेंगी ? ॥ ५ ॥ विशेष हाव–भाव सम्पन्न, परमधीर, हीरा रत्नों के हारों से सुशोभित, कञ्चन के कलश के समान, हाथी के उन्नत मस्तक को लज्जित करने वाले सुन्दर स्तनों वाली प्रसंसनीय मन्द हास्य करती

हुई, सुख सागर लहराने वाली हे श्री जू ! आप अपनी कृपा कटाक्ष का भाजन हमको कब करेंगी ? ॥६॥ कमल नाल के तन्तु जैसे सुकोमल, प्रेमरस तरङ्ग के रंग से सुरञ्जित जिनकी भुजवल्ली ललित लताओं के समान लावण्य सम्पन्न है, श्याम अञ्जन सी कजरारी सुन्दर नीली जिनकी आँखें हैं, जिनकी भाव भरी मधुर दृष्टि को देखकर प्रियतम विमुग्ध होकर मनोज के मोह में पड़ जाते हैं ऐसी हे श्री जू ! आप आपनी कृपा कटाक्ष का पात्र हमको कब बनावेंगी ? ॥ ७ ॥ सोने की मालिका (कण्ठी) से सुशोभित, तीन रेखा युक्त शङ्ख के समान सुन्दर ग्रीवा (कण्ठ) वाली, मङ्गलसूत्र की तीन लड़ियों से अलंकृत जिनके तीनों रत्नों का दिव्य प्रकाश दूर से ही चमकता है, सुन्दर घुंघराली काली रत्न तथा पुष्पों से गुंथी हुई जिनकी वेणी हैं ऐसी हे श्री जू ! अपनी कृपा का भाजन हमको कब बनावेंगी ॥ ८ ॥ पृथुल-नितम्बों पर किंकणी जाल से मञ्जुल बनी हुई रत्न जटित (करधनी) लहराती है, तथा हाथी के सुण्ड के समान सुन्दर सुशोभित गौर जंघाओं वाली हे श्री जू ! अपनी कृपा का पात्र हमको कब करेंगी ॥ ९ ॥ अनेक मन्त्रों की मञ्जुल ध्वनि करने वाले जिनके चरण नूपुर हैं, तथा राजहँस को भी लज्जित करने वाली जिनकी मधुर मनोहर चाल है, हेमवल्लरी को भी लज्जित करने वाली जिनकी देह कान्ति है ऐसी हे श्री जू ! आप अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र हमको कब बनावेंगी ॥ १० ॥ अनन्त कोटि विष्णु लोक की लक्ष्मी जी जिनके चरणों को विनीत भाव से वन्दना करती हैं, पार्वती जी-इन्द्राणी तथा सावित्री को भी वरदान देने वाली अपरम्पार सिद्धि ऋद्धि की वृद्धि करने वाली जिनके सुचारु चरणों की अंगुलियों की नखावली हैं, ऐसी हे श्री किशोरी जो ! आप अपनी कृपा कटाक्ष का भाजन हमको कब करेंगी ॥ ११ ॥ हे यज्ञेश्वरी ! हे क्रिया योगेश्वरी ! हे स्वाहा स्वधेश्वरी ! हे सुरेश्वरी । हे तीनों वेद विद्याओं की ईश्वरी ! हे प्रमाणेश्वरी ! हे शासनेश्वरी ! हे रमेश्वरी ! हे क्षमेश्वरी ! हे प्रमोद काननेश्वरी ! आप अपनी कृपा कटाक्ष का भाजन हमको कब बनावेंगी ? ॥ १२ ॥

इस अद्भुत स्तोत्र को सुनकर श्रीभूमिनन्दिनी सर्वदा अपने शरणागत जन को अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र बनाती है । अनेक जन्मों के संचित पापों का नाश हो जाता है, त्रिगुणात्मक कर्म नष्ट हो जाते हैं, तथा श्री राजेन्द्रकुमार श्रीरामजी के श्री कनकभवन मन्दिर में प्रवेश होता है । तब इस प्रकार का स्तोत्र पाठ करने वाले हमको आप अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र बनावेंगी ॥ १३ ॥ पूर्णिमा को-नवमी को-दशमी को-शुद्ध बुद्धि पूर्वक एकादशी को तथा त्रयोदशी को-जो कोई पवित्रान्त करण से इसका पाठ करता है, वह जो-जो चाहेगा वह प्राप्त हो जायगा । तथा श्री सीता जी के कृपा कटाक्ष से प्रभु के चरणों में प्रेम लक्षण भक्ति उत्पन्न होती है । घुटन पर्यन्त नाभिपर्यन्त-हृदय पर्यन्त तथा कण्ठ पर्यन्त श्रीसीता-कुण्ड के जल में खड़ा होकर जो साधक १०८ बार इसका पाठ करेगा, उसके सभी मङ्गल मनोरथ पूर्ण होते हैं तथा वचन सिद्धि का सामर्थ्य प्राप्त होता है । लोक में देव दुर्लभ परम ऐश्वर्य पाता है तथा इन्हीं आँखों से श्री किशोरी जी का दर्शन प्राप्त कर लेता है । अनन्त करुणामयी श्री किशोरी जी प्रसन्न होकर उसको महान् वरदान देती हैं उसके प्रभाव से उनके प्राणप्रिय स्वामी

सुन्दर श्रीरामजी को इन आंखों देखकर कृतार्थ हो जाता है। श्री रघुनाथ जी कृपा कर उसको नित्य लीला में प्रवेश करने का अधिकार प्रदान करते हैं, इससे बढ़कर श्री वैष्णवों को अन्य कुछ भी प्रार्थनीय पदार्थ है ही नहीं, ऐसा अति दुर्लभ तत्त्व रहस्य पाकर जीव धन्य हो जाता है ॥ १४-१५-१६-१७-१८-१९ ॥

"इस प्रकार यह "श्रीसीता-कृपा कटाक्ष स्तोत्र" सम्पूर्ण हुआ।"

अथ श्रीजानकीमन्त्रपद्धतिस्तोत्र प्रारम्भः

ॐ वैदेही-मैथिली-सीता-जानकी-जनकात्मजा ।
भूमिजा-रामजाया च योगमाया-कुजानुजा ॥ १ ॥
अशोक वनिकासंस्था-सती च त्रिजटा सखी ।
विमला-वह्नि संस्था च पुष्पकासन संस्थिता ॥२॥
श्वश्रू शुश्रूषण परा-देवी दशरथ स्नुषा ।
वरदा---वायुपुत्रस्य---कुशमाता---कुशेशया ॥३॥
एकविंशति नामानि कुजायाश्च पठेत्तु यः ।
विमुक्तः सर्व पापेभ्यो राम लोकं स गच्छति ॥४॥
मन्त्र पद्धतिकं स्तोत्रं जानक्या कल्प भूरुहम् ।
न दातव्यं न दातव्यं न दायव्यं कदाचन ॥५॥

॥ इति श्रीजानक्याः एकविंशति नामात्मकं मन्त्रपद्धतिकं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

—: श्री जानकी मन्त्र पद्धति स्तोत्रम् :—

ॐ वैदेही-मैथिली-सीता-जनकात्मजा-भूमिजा-श्रीरामजाया-योगमाया-भूमि पुत्री की छोटी बहिन (अर्थात् प्रथम भूमिजा बनकर पीछे जनक पुत्री बनी इसलिये) अशोक वन में विराजमान, सती-त्रिजटा की सखी विमला-अग्नि में निवास करने वाली, पुष्पक विमान पर बैठी हुई, सास (श्री कौशल्या जी) की सेवा में परायण, देवी- श्री दशरथ जी की पुत्रवधू हनुमान जी को वरदान देने वाली, कुश की माता, कुश के बिछौना पर सोने वाली।"

ये इक्कीस भूमिनन्दिनी के दिव्य नामों का जो विद्वान् पाठ करता है, वह सर्व पापों से विमुक्त हो जाता है तथा श्रीराम धाम को प्राप्त करता है। यह मन्त्र पद्धति का श्रीजानकी जी का स्तोत्र दिव्य कल्पवृक्ष है। यह सबको नहीं देना चाहिए, नहीं देना चाहिये, कभी नहीं देना चाहिये।

"यह श्रीजानकी जी का एक विंशति नामात्मक मंत्र पद्धतिक स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।"

॥ श्रीउर्मिला-स्तोत्रम् ॥

विद्युन्निभां निखिलभूषणभूषिताङ्गीं, नित्यांश्च सखिगणैरर्चित वीणाश्रितनीम् ।
ध्यायेऽत्र सौमित्रिप्रियां सुधामकेलिस्थितां, श्रीचोर्मिलां भक्तजनैश्च वन्द्याम् ॥१॥
तनुत्विषा निर्जित कामकामिनीं कदम्बमाला कलितामुरस्थलीम् ।
कवीन्द्रवृन्दैरभि वन्द्यमाना कोटीन्दु भास्वरविभां परिमार्जयन्तीम् ॥२॥
मन्दस्मितां मदनकोटिविनिर्जिताङ्गीं चम्पद्युतिं सरसिजाननचारुवक्त्राम् ।
दिव्याम्बरां मणिविभूषण विद्युदाभां तामुर्मिलां नौमि मनो वचोभिः ॥३॥
सर्वेश्वरीं सकल सौभगतानुकूलां सौन्दर्यसार शरदिन्दु निभां मनोज्ञाम् ।
श्रीलक्ष्मणस्याङ्कतले निविष्टां, तामुर्मिलां नौमि मनो वचोभिः ॥४॥
साकेत पत्तन निकेत निविष्टमानां, दिव्यालवाल परिशीलन दीप्यमानाम् ।
दिव्यालिसंकुलनिषेवित भाव्यमानां, तामुर्मिलां नौमि मनो वचोभिः ॥५॥
चन्द्राननां चपल खञ्जन लोचनाभ्या,मानन्दयन्निखिल वाम दृशाङ्गनानां ।
श्रीलक्ष्मणेन सह केलि परायणां च तामुर्मिलां नौमि मनो वचोभिः ॥६॥
भव्यां सुनव्य नवयौवन भार सक्तां व्यालोल प्राञ्जल पटोन्नत सत्कुचान्तां ।
हारैर्मनोहरतरोरसि भ्राजमानां तामुर्मिलां नौमि मनो वचोभिः ॥७॥
मञ्जीरमञ्जु मणिसिञ्चितमञ्जरीभि केयूर कङ्कण ललाम च सद्वचाभिः ।
श्रीरत्नवेद्युपरि संस्थितनायिकाभिस्तामुर्मिलां नौमि मनो वचोभिः ॥८॥
नानाविधानि कलया कलितानि जालौ संसेव्यमान सततं श्रुति मूर्छनाभिः ।
सङ्गीतगीतरचनाभि हनन्ततालैस्तामुर्मिलां नौमि मनो वचोभिः ॥९॥
साहित्यशास्त्र घटनाभिरनन्तकाव्यालङ्कार चित्रपटुछन्द प्रबन्ध वृन्दैः ।
वीणाप्रवीण स्वरमण्डलमर्च्यमानां, तामुर्मिलां नौमि मनो वचोभिः ॥१०॥
श्रीमत्प्रमोद वनभूमि सुचित्रितेषु रत्नाद्रि गह्वरनिकुञ्ज सुमण्डितेषु ।
श्रीलक्ष्मणेन सह क्रीडन केलि दक्षां तामुर्मिलां नौमि मनो वचोभिः ॥११॥
दिव्याङ्गना ललित मण्डल मण्डितायां श्रीराजमन्दिर तले मणिवेदिकायाम् ।
श्रीलक्ष्मणेन सह केलिपरां परेशीं तामुर्मिलां नौमि मनो वचोभिः ॥१२॥

इति स्तवं नर्म सखैः प्रगीतं प्रीत्यापठेद्यः खलु मर्त्यलोके ।
नित्यं प्रभातसमये ललना समेतं पश्यन्समेतिपदवीं स्वरयाधिकारिणीम् ॥१३॥

॥ इति श्री मद्रामसखेन्द्र श्रीसीताप्रसाद स्वामि विरचितं श्रीउर्मिला स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

—:०:—

श्री लक्ष्मण वल्लभायै नमः

॥ श्रीउर्मिला स्तोत्रम् ॥

बिजली के समान गोर, समस्त भूषणों से विभूषित, वीणा बजाती हुई, नित्य ही सखी-जनों से सुपूजित, भक्तजनों द्वारा वन्दनीया, श्री सुमित्रा नन्दन के बायें भाग में विराजमान उनकी प्राणप्रिया श्री उर्मिला जी का मैं ध्यान करता हूं ॥ १ ॥ देह की कान्ति से कामदेव की कामिनी रति के गर्व को भी जीतने वाली, सुन्दर कदम्ब की माला को हृदय में धारण करने वाली कवीन्द्रों के समूहों द्वारा अभिवन्दिनीया-करोड़ों चन्द्र तथा सूर्य की प्रभा को भी लज्जित करने वाली ॥ २ ॥ मन्द मधुर मुसकाती हुई करोड़ों कामदेव को जीतने वाली चम्पा पुष्प के समान गौरांगी, कमल पुष्प के समान सुन्दर मुखारविंन्द वाली, दिव्य वस्त्र तथा मणि-रत्नों के आभूषणों से विभूषित, बिजली के समान प्रभा वाली उन श्रीउर्मिलाजी को मैं तन-मन-वचन से प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥ सर्वेश्वरी, सकल सौभाग्यशाली सौन्दर्य का सार स्वरूप शरद् चन्द्रमा के समान मुखचन्द्र वाली परम मनोहर श्रीलक्ष्मणजी के वामाङ्ग में विराजी हुई उन श्री उर्मिला जी को मैं तन-मन-वचन से प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥ श्री साकेत नगर में निवास करने वाली, दिव्य सखियों के द्वारा सुसेवित-दिव्य अलियों के मध्य में विराजमान उन श्री उर्मिला जी को मैं तन-मन-वचन से प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥ चन्द्र के समान मुख वाली खञ्जन के समान चपल नेत्रों द्वारा सभी सखी जनों को परमानन्द प्रदान करने वाली, श्री लक्ष्मण जी के साथ केलि कौतुक परायण श्री उर्मिला जी को मैं तन-मन-वचन से प्रणाम करता हूं ॥ ६॥ भव्य नवयौवन सम्पन्ना, अपने वस्त्राञ्चलसे उन्नत उरोजों को छिपाने वाली अत्यन्त मनोहर हारों से अलंकृत हृदय वाली श्रीउर्मिलाजी से को मैं तन-मन-वचन से प्रणाम करता हूं ॥ ७ ॥ मञ्जुल मणि मुक्ता विनिर्मित मञ्जीर-बाजूबन्द कङ्कण-किङ्कणी को ललित प्रभा से प्रकाशित-नायिकाओं द्वारा सेव्य रत्न वेदिका पर विराजमान श्री उर्मिला जी को मैं तन-मन-वचन द्वारा प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥ अनेक प्रकार के राग-ताल-स्वर-मूर्च्छना-आलाप से सुमधुर सङ्गीत-गीत रचना की अनेक कलित कलाओं से प्रसन्न श्री उर्मिला जी को मैं तन मन-वचन से प्रणाम करता हूँ ॥ ९ ॥ साहित्य शास्त्र की घटनाओं से भरपूर अनन्त काव्य कला अलङ्कार छन्द-प्रबन्धों द्वारा वीणा-सितार आदि बाजाओं के मधुर गान से अर्चनीया (आराधनीया) श्री उर्मिला जी को मैं तन-मन-वचन से प्रणाम करता हूँ ॥ १० ॥ सुन्दर चित्र विचित्र रत्नादि के गह्वार-कुञ्ज-निकुञ्ज से सुशोभित श्री प्रमोदवन की दिव्य भूमि में

सुदक्षा श्री उर्मिला जी को तन-मन-वचन से श्री लक्ष्मण जी के साथ विहार केलि क्रीड़ा में प्रणाम करता हूँ ॥ ११ ॥ श्रीराजमन्दिर के प्रांगण में ललित मणि मण्डित वेदिका के मध्य मण्डल पर विराजमान श्री लक्ष्मण जी के साथ केलि कौतुक परायण परमेश्वरी श्री उर्मिला जी को मैं तन-मन-वचन से प्रणाम करता हूं ॥ १२ ॥

इस प्रकार नर्म सखा श्री सीताप्रसाद विरचित यह श्री उर्मिला स्तोत्र जो प्रीति पूर्वक प्रभात काल में इस मृत्युलोक में पाठ करता है, वह श्री उर्मिला जी के सहित श्री लक्ष्मण जी का दिव्य दर्शन पाकर श्री सीताराम जी की सेवा करने योग्य अपने रसाधिकार की पदवी को पाकर कृतार्थ हो जाता है ॥ १३ ॥

"यह श्रीमद्रामसखेन्द्र श्री सीताप्रसाद विरचित श्रीउर्मिला स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ ।"

श्रीमाण्डवी स्तोत्रम्

वन्दे नीलमणिप्रभां जनकजा प्राणप्रिया माण्डवीं—
सौन्दर्य्यैक निकेतनां परसखीं लीलाविनोदे रताम् ।
सर्वाभूषण भूषितां सुललितां सङ्गीतवाद्य प्रियां—
नित्यां रासविहारसार सरसीं रामाङ्घ्रि निःश्रेणिकाम् ॥१॥

वन्दे दिव्य पदाम्बुजाम्बुजधरां सौवर्ण सद्मेस्थितां—
नित्यां नित्य विहार केलिनिरतां श्रीजानकी वल्लभाम् ।
श्रीरामाह्लिकरीं कृपैकनिलयां भक्तिप्रदां भास्वराम्—
स्वानां स्वेष्ट फलप्रदान निरतां श्रीमाण्डवीं संश्रये ॥२॥

वन्दे श्रीभरतस्य भामिनिपरां प्रेमार्णवां सद्रुचां—
विद्युन्निर्जित दिव्य भूषण पटैराच्छादितां प्रोत्सुकाम् ।
पद्मामां नवनील पङ्कजवने संक्रीडने तत्परां—
नाना पुष्पपराग रञ्जित करां श्रीमाण्डवीं संश्रये ॥३॥

वन्दे नित्य विनोद वर्धनकरीं श्रीरामसान्निध्यदां—
सौशील्यादि गुणार्णवां वसुमतीनाथस्नुषां निर्मलाम् ।
नित्यां श्रीभरतस्य वामनिलयां विद्याविवेक प्रदां—

प्रीत्योत्तुङ्ग मृदङ्ग वादनरतां श्रीमाण्डवीं सश्रये ॥४॥

प्रीत्योत्फुल्ल मुखाम्बुजाम्बुजकरां कन्दर्पकोटि द्युति-
जानक्या सहचारिणीं प्रणयिनीं प्राणप्रियां प्रेष्ठताम् ।
वन्दे वन्द्यपदां सदा वसुमतीनाथस्नुषां भामिनीं-
सच्चिन्मोदमयीं सदैव भरतस्याङ्केस्थितां माण्डवीम् ॥५॥

वन्दे नित्यप्रसन्न प्रीति परमानन्दैक लीलारतां-
जानक्या भगिनीमचिन्त्य विभवां लक्ष्म्यादिभिः सेविताम् ।
विश्वाधारमयीं विहारनिरतां वैराग्य भक्तिप्रदां-
प्रेष्ठां श्रीभरतस्य भामिनीपरां श्रीमाडण्वीं संश्रये ॥६॥

वन्दे नित्यनिकुञ्जपुञ्ज साकेत वल्ली वने-
सन्तानादि विचित्र वृक्षकलिते श्रीनेत्रजायास्तटे ।
जानक्या सह नृत्यकेलि कलया संक्रीडयन्तीं सदा-
यूथेशीं रसभाव शिक्षणपरां श्रीमाडण्वीं संश्रये ॥७॥

वन्दे सर्व रसाश्रयां साहित्य विद्या विधौ-
सङ्गीतागम प्रोक्त बन्ध रचना चातुर्य सारा वृताम् ।
सम्यङ्नृत्य विधान गान कलया संमोहयन्तीं भजे-
वाद्यान्वादयतीं सदैव सुखदां श्रीमाण्डवीं संश्रये ॥७॥

वन्दे चारु सुहामिनीं प्रणयिनीं श्रीजानकी सङ्गमे-
शश्वच्चन्द्रकलादि यूथनिलये संशोभयन्तीं शुभाम् ।
भार्या श्रीभरतस्य भूमितनया प्राणप्रियां प्रसीं-
श्रीमन्मैथिल भूमि भूभुजसुतां श्रीमाण्डवीं संश्रये ॥९॥

वन्देऽहं चारुहासां शरदविधुमुखामासहासां प्रभासां-
सर्वाशां परिपूरणीं प्रणतजन सुखानन्ददां पत्य द सं ।
श्रीसीता पादपद्मे शुभमणिनिलये नित्यसेवाधिकारे-
दात्रीं सर्वार्थ सद्यः प्रणयिजनमनो माण्डवीं संश्रयेऽहम् ॥१०॥

दिव्याम्बरां दिव्य विभूषणाढ्यां दिव्याङ्गना परिसेवित पादपङ्कजाम् ।
दिव्याङ्गणे दिव्यलतादि रम्यतां विलोकयन्तीं भरतस्य भामिनीम् ॥११॥

सल्लक्षणैर्लक्षित दिव्य वैभवां, प्रभाजमानां द्युति दिव्यरूपाम् ।
भजेऽनिशं श्रीभरतस्य भामिनीं सखीगणैरर्चित पादपङ्कजाम् ॥१२॥

इति श्रीमाण्डवीदेव्याः स्तोत्रं परमभास्वरम् । श्रीरामे जानकीजाने भक्तिदं रतिदं परम् ।
यः पठेत्परया भक्त्या ह्येकान्ते नियत व्रतः । स एव सकलाचार पूर्णः पूर्ण मनोरथः ॥

॥ इति श्रीमद्राम सखेन्द्र श्रीस्वामि सीता प्रसाद विरचितं श्रीमाण्डवीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

❀ श्री भरतवल्लभायै नमः ❀

॥ श्रीमाण्डवी--स्तोत्रम् ॥

श्री जनकराज किशोरी जू की प्राणप्रिया, नीलमणि के समान कान्तिमती-सौन्दर्य की मन्दिर-प्रिय सखियों के साथ लीला विनोद में लगी हुई, सर्व आभूषणों से विभूषित-सुललित सङ्गीत वाद्य रसिक, नित्य स्वरूपा, रास विहार की सरस सार सम्भार रखने वाली, श्रीरामचन्द्र जी के चरणारविन्द की प्रौढ़ निष्ठा वाली श्री माण्डवी जी की मैं वन्दना करता हूँ ॥ १ ॥ दिव्य चरणारविन्द धारण करने वाली श्री माण्डवी जी को मैं वन्दना करता हूं, जो कञ्चन भवन में विराजमान-नित्य विहार केलि करने वाली- श्री जानकी जी की अत्यन्त प्यारी-श्री रामजी की प्राप्ति कराने वाली, कृपा की भण्डार-भक्ति प्रदान करने वाली अति सुप्रकाशित-अपने आश्रितों के अभीष्ट मनोरथ फल की पूर्ति करने वाली श्री माण्डवी जी की वन्दना करता हुआ मैं आश्रय ग्रहण करता हूं ॥ २ ॥ परम प्रेम की सागर-सुन्दर रुचि वाली-विजली को भी लज्जित करने वाले दिव्य वस्त्रालङ्कार से आच्छादित-प्रेमोत्सुका-कमल के समान कान्ति वाली-नव नीलकमल के वन में क्रीड़ा करती हुई नाना प्रकार के पुष्पों के पराग से जिनके हाथ रंगे हुए हैं ऐसी श्री माण्डवी जी की वन्दना करता हुआ मैं आश्रय लेता हूँ ॥ ३ ॥ नित्य दिव्य भगवत् विनोद को बढ़ाने वाली- श्रीराम जी का सानिध्य प्रदान करने वाली-नित्य दिव्य भगवत् विनोद को बढ़ाने वाली- श्रीराम जी का सानिध्य प्रदान करने वाली-

नित्य दिव्य भगवत् विनोद को बढ़ाने वाली- श्रीराम जी का सानिध्य प्रदान करने वाली- श्री दशरथ जी की पुत्रवधू-निर्मल स्व-सौशील्यादि गुणों की सागर-पृथिवी पति चक्रवर्ति राजा श्री दशरथ जी की पुत्रवधू-निर्मल स्व-सौशील्यादि गुणों की सागर-पृथिवी पति चक्रवर्ति राजा श्री दशरथ जी की पुत्रवधू-निर्मल स्व-रूपा विद्या विवेक को प्रदान करने वाली-प्रीति पूर्वक अति श्रेष्ठ मृदङ्ग के बजाने में निपुण-सदैव श्री भरत जी के वाम भाग में विराजमान श्री माण्डवी जी का वन्दन करता हुआ मैं आश्रय ग्रहण करता हूं । ॥ ४ ॥ परम प्रीति से खिले हुए कमल के समान जिनका मुख तथा हाथ है, करोड़ों कन्दर्प के समान जो प्रकाशित हैं, जो श्री जानकी जी के सङ्ग क्रीड़ा कौतुक करने वाली तथा सदैव साथ रहने वाली है, जो अत्यन्त प्रेम वाली तथा नम्रता वाली है जो अपने प्रियतम की प्राणप्रिया है । सच्चिदानन्द मयी-वन्दनीय चरण-चक्रवर्ति राजा पृथिवी पति की पुत्रवधू श्री भरत जी के सङ्ग में सदैव विराजमान श्री माण्डवी जी का वन्दन करता

हुआ मैं आश्रय लेता हूं ॥ ५ ॥ नित्य प्रपन्ना-प्रीति परमानन्द पूर्ण प्रभु की रसमय लीलाओं की रसिका-श्री जानकी जी की बहिना-श्रीलक्ष्मणजी आदि द्वारा सेवित अचिन्त्य वैभव सम्पन्न विश्व की आधारमयी-विहार निरत-भक्ति वैराग्य प्रदान करने वाली-परम श्रेष्ठ श्री भरत जी की भामिनी पराशक्ति श्री माण्डवी जी का वन्दन करता हुआ मैं आश्रय लेता हूं ॥ ६ ॥ नित्य निकुञ्ज भवनों से सुशोभित श्रीसाकेत नगरी के वन में सान्तानिक आदि विचित्र वृक्षों से सम्पन्न-श्री सरयू जी के तट पर-श्री जानकी जी के साथ नृत्य केलि की ललित लीला क्रीड़ा करती कराती हुई-यूथेश्वरी-सदा रस भाव का शिक्षण देने वाली श्री माण्डवी जी का वन्दन करता हुआ मैं आश्रय ग्रहण करता हूं ॥ ७ ॥ सर्वरसों की आश्रय-रसमयी-साहित्य विद्या के विधान में तथा सङ्गीतागम कथित छन्द प्रबन्ध रचना की चातुरी के सार से भरी हुई, नृत्य गान की ललित कला द्वारा श्रीयुगल प्रभु को मोहित करती हुई सदैव सुखप्रद बाजा बजाने वाली श्री माण्डवी जी का वन्दन करता हुआ मैं आश्रय ग्रहण करता हूं ॥ ८ ॥ श्री जानकी जी के सङ्ग में सुन्दर हंसती हुई-परम प्रेम विनय सम्पन्न-निरन्तर श्री चन्द्रकलादि यूथेश्वरियों के बीच में अत्यन्त शोभती हुई, परम शुभ-श्री भूमिनन्दिनी जानकी जी के प्राण-प्रिय प्रभु की अत्यन्त प्रिय श्रीमन्मैथिल भूमिपति राजा की राजकुमारी श्री माण्डवी जी का वन्दन कर मैं आश्रय ग्रहण करता हूं ॥ ९ ॥ सुन्दर हास्य वाली-शरद् चन्द्रमा के समान मुखचन्द्र की प्रभा से सम्पन्न, सब आशाओं की पूर्ति करने वाली-प्रणतजनों को परम सुख आनन्द प्रदान करने वाली-श्री सीता जी के चरण कमलों के मणिमय निवास में नित्य सेवा-धिकार प्रदान करने वाली भक्तों के सर्वार्थ सिद्धि करने वाली श्री माण्डवी जी वन्दनकाकरता हूं ॥ १० ॥ दिव्य वस्त्र-दिव्य विभूषण तथा दिव्याङ्गनाओं से सुशोभित पूज्य चरण-दिव्य प्राङ्गण में दिव्य लतादि रमणीय दृश्य देखती हुई श्री भरत जी की भामिनी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ११ ॥ अपने सुलक्षणों से अपने दिव्य वैभव को प्रकाशित करने वाली-अपनी दिव्य द्युति से अपने दिव्य स्वरूप श्रीविग्रह को प्रदीप्त करने वाली-सभी गणों से समर्चित पूज्य चरणारविन्द वाली श्री भरत जी की भामिनी श्री माण्वी जी का मैं निरन्तर भजन करता हूं ॥ १२ ॥ श्री जानकी पति श्रीराम में भक्ति प्रीति प्रदान करने वाला परम श्रेष्ठ श्री माण्डवी देवी के परम तेजस्वी स्तोत्र को एकान्त में नियमित व्रत होकर जो परम भक्ति पूर्वक पाठ करता है, उसको सभी धर्माचार का पूर्ण फल प्राप्त होकर उसके सभी सफल मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं ॥ १३-१४ ॥

"यह श्रीमद्राम सखेन्द्र श्री स्वामि सीताप्रसाद विरचित श्री माण्डवी स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।"

श्रीश्रुतिकीर्ति-स्तोत्रम्

मन्दस्मितां मधुरभाषणशीलरूपां दिव्यानुरूपनवभूषणभूषिताङ्गीम् ।
श्रीशारदेन्दु निभनिर्मलभास युक्तां नित्यं भजामि श्रुतिकीर्त्तिप्रियाङ्क संस्थाम् ॥
कवीन्द्र वृन्दारक वृन्द वन्दितां, कर्पूर कुन्देन्दुनिभां मनोहराम् ।
बालां विशालनयनां वदनाभिरामां, वन्दे रिपुघ्न वनितां श्रुतिकीर्ति नाम्नाम् ॥२॥
श्रीमन्महाराज कुलप्रसूतां, श्रीमैथिलेन्द्रतनयां विबुधेड्यमानाम् ।
सौलभ्यसौन्दर्यसुखैकसारां, वन्दे रिपुघ्नवनितां श्रुतिकीर्तिनाम्नाम् ॥३॥
श्रीमानशोकवनमण्डपमध्यसंस्थां शत्रुघ्न लालित मुखाम्बुज पीतसाराम् ।
कन्दर्पदर्पदलनैक सुधाम्बुधारां, वन्दे रिपुघ्नवनितां श्रुतिकीर्तिनाम्नाम् ॥४॥
आनन्दकन्दविनिवेशितमञ्जुहारां, नित्यां सुधांशुवदनाञ्चितवेदसाराम् ।
नानाविधैःस्ववधूगण सेवितां च, वन्दे रिपुघ्नवनितां श्रुतिकीर्ति नाम्नाम् ॥५॥
दाम्पत्यभावप्रणय परतत्त्वसारां, सौन्दर्यशील सुखसौलभतानुकाराम् ।
भावानुभाव रसभेद कलैकधारां, वन्दे रिपुघ्नवनितां श्रुतिकीर्तियुतामुदाराम् ॥६॥
साहित्यशास्त्र परिकीर्तन कीर्तिसारां, रामप्रसाद परिशील सुधाम्बुधाराम् ।
संशोभितासखिगणैस्सहदिव्यमुद्रैं, वन्दे रिपुघ्नवनितां श्रुतिकीर्तियुतामुदाराम् ॥७॥
सौदामिनीशतसहस्रजितानुकारां, मन्दस्मिताधरसुरञ्जितपीतसाराम् ।
श्रीरत्नवेद्युपरिसंस्थित प्रेमधारां, वन्देरिपुघ्नवनितां श्रुतिकीर्तियुतामुदाराम् ॥८॥
साक्षादनन्त रसरास कदम्बसारां, श्रीजानकी पदसरोजरसाम्बुधाराम् ।
श्रीशत्रुसूदनमुखेन्दु प्रभानुकारां, वन्दे रिपुघ्नवनितां श्रुतिकीर्तियुतामुदाराम् ॥९॥
आनन्द सिन्धुलहरीकृत प्रेमधारां, श्री श्रीसखेन्द्र सरयू जल केलिकाराम् ।
सौमित्रिसङ्गमसमुद्भवसुप्रकारां, वन्दे रिपुघ्नवनितांश्रुतिकीर्तियुतामुदाराम् ॥१०॥
कोटिन्दुजित् वरमुखेन्दु रसैकसारां, नानाविधाम्बर विभूषण शोभिताङ्गाम् ।
श्रीमत्प्रमोद वनकुञ्जगृहे निविष्टां, वन्दे रिपुघ्नविनतां श्रुतिकीर्तियुतामुदाराम् ॥१०
श्रीराघवेन्द्र कुलमण्डन तत्त्वसारां, श्रीमत्सुधांशु वदनांचित सत्वसाराम् ।
सद्धर्मरक्षण वरेण्ठ पदप्रदायिनीं, वन्दे रिपुघ्न वनितांश्रुतिकीर्तिनाम्नाम् ॥१२
यः पठेच्छ्रद्धयायुक्तः श्रुतिकीर्तिस्तवंनरः । सीताप्रसाद संयुक्तो प्राप्नुयाद्रघुनायक
॥ इति श्रीमद्रामसखेन्द्र स्वामि श्रीसीताप्रसाद विरचितं श्रीश्रुतिकीर्ति स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

❀ श्री शत्रुघ्नवल्लभायै नमः ❀

॥ श्री श्रुतिकीर्ति स्तोत्रम् ॥

मन्द हास्य युक्त मधुर भाषण करने वाली, रूप-शील से सम्पन्ना, दिव्य स्वरूपानुरूप नवीन भूषणालङ्कारों से विभूषित-श्रीशरद् पूर्णिमा के चन्द्र जैसी निर्मल प्रभा युक्ता, अपने प्रियतम के अङ्क में विराजमान श्री श्रुतिकीर्ति जी का नित्य मैं भजन करता हूँ ॥ १ ॥ श्रेष्ठ कवि तथा देवताओं के वृन्दों से वन्दिता-कर्पूर-कन्द तथा चन्द्र के समान मनोहर गौरवर्णा-विशाल नयनाभिराम वदना-रम्यबाला- श्री शत्रुघ्न जी की महाराणी श्रुतिकीर्ति जू की मैं वन्दना करता हूँ ॥ २ ॥ श्रीमन् मिथिलेन्द्र महाराज के कुल में उत्पन्ना-श्री मैथिलेन्द्र जू की राज-कन्या-देवताओं द्वारा वन्दनीया-सौन्दर्य-सौलभ्य तथा सुख की सार स्वरूपा श्री श्रुतिकीर्ति नामक श्री शत्रुघ्न जी की महाराणी को मैं वन्दन करता हूं ॥ ३ ॥ अशोक वन के मण्डप के मध्य विराजमान श्रीमान् शत्रुघ्न जी के द्वारा लाड़ प्यार प्राप्त करने वाली-गौर सुन्दर कमल के समान मुखारविन्द वाली-कन्दर्प के दर्प को दलन करने वाली अमृत रस की धारा श्रीशत्रुघ्न पत्नी श्री श्रुतिकीर्ति जू का मैं वन्दन करता हूं ॥ ४ ॥ आनन्द कन्द मञ्जुल हार पहरने वाली-सदैव चन्द्रमा के समान मुख शोभा सम्पन्ना-वेदों की तत्त्वसार रूपा-नाना प्रकार की स्वर्गीय वनिताओं द्वारा सुसेवनीया-श्री शत्रुघ्न जी की पत्नी श्री श्रुतिकीर्ति का मैं वन्दना करता हूँ ॥ ५ ॥ दाम्पत्य भाव प्रेम के परम तत्त्व के सार को जानने वाली-सौन्दर्य-शील सुख-सौलभ्य की साक्षात् प्रतिमा-भाव-अनुभाव-रस के भेद-कला कौतुकादिक में परम प्रवीण श्री श्रुतिकीर्ति नामक श्री शत्रुघ्न जी की पत्नी को मैं वन्दना करता हूँ ॥ ६ ॥ साहित्य शास्त्र के व्याख्यान में अत्यन्त कीर्ति प्राप्त करने वाली श्रीरामजी की कृपाप्रसाद की सुधा रस धारा में अवगाहन करने वाली अपनी दिव्य मुद्रा से सखिजनों के मध्य से सुशोभित श्री शत्रुघ्न जी की महाराणी श्री श्रुतिकीर्ति जी की मैं वन्दना करता हूं ॥ ७ ॥ सहस्रों हजारों बिजली के प्रकाश को जीतने वाली श्री देहकान्ति सम्पन्ना-मन्द मधुर मुसकान भरे अधरों से सुरञ्जित गौराङ्गी श्री रत्नवेदिका पर विराजमान प्रेम की धारा श्री श्रुतिकीर्ति नामक श्री शत्रुघ्न जी की महाराणी का मैं वन्दन करता हूँ ॥ ८ ॥ अनन्त रासरस के समूहों की साररूपा, श्रीजानकी जी के चरण कमलों के प्रेमरस की धारा-श्री शत्रुघ्न जी के मुखचन्द्र की प्रभा (चन्द्रिका) के समान श्री शत्रुघ्न जी की पत्नी श्री श्रुतिकीर्ति का मैं वन्दन करता हूं ॥ ९ ॥ आनन्दसिंधु की लहरी-प्रेम धारा को बहाने वाली-श्रीराम सखेन्द्रों को श्रीसरयू जल क्रीड़ा कौतुक में आश्चर्य चकित कर देने वाली श्री सुमित्रा नन्दन के सङ्ग से उत्पन्न आनन्द से भरी हुई श्री श्रुतिकीर्ति नामक श्री शत्रुघ्न जी की पत्नी को मैं वन्दन करता हूँ ॥ १० ॥ करोड़ों चन्द्रमा की शोभा को जीतने वाले मुख की छवि से सुशोभिता-रसों की सार-अनेक प्रकार के चित्र विचित्र वस्त्र अलङ्कारों से विभूषित अङ्ग वाली-श्रीमत्प्रमोदवन के कुञ्ज गृह में विराजमान श्री शत्रुघ्न जी

की वनिता श्री श्रुतिकीर्ति की मैं वन्दना करता हूं ॥ ११ ॥ श्रीराघवेन्द्र जू के कुल की कीर्ति बढ़ाने वाली-तत्त्व की साररूपा-चन्द्रमा के सुधारस का सार सत्त्व भरे हुए श्री मुख की शोभा वाली-सद्धर्म की रक्षा करने वाले श्रेष्ठ पुरुषों को अभीष्ट पद प्रदान करने वाली श्री श्रुतिकीर्ति नामक श्री शत्रुघ्न जी की महाराणी की मैं वन्दना करता हूँ ॥ १२ ॥

इस श्री श्रुतिकीर्ति स्तोत्र का जो श्रद्धा सम्पन्न होकर पाठ करता है वह श्री सीता जी की कृपा से भरपूर होकर श्री रघुनाथ जू को प्राप्त करता है ॥ १३ ॥

"इति श्रीमद्रामसखेन्द्र स्वामि श्रीसीताप्रसाद विरचित यह श्रीश्रुतिकीर्ति स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।"

श्रीजानकी गीतम्

जय जय जानकि ! रघुपति दयिते ।
विधि शिव सनक शुकादिक महिते ॥
देवि ! शरणं तव करुणा, अभिलषिता त्रिभुवन गुरुणा ॥ ध्रुव ॥
पदनखरद्युति विनमित चन्द्रे ! निजपति पद परिचरण वितन्द्रे ।
दशन शिखर किरणाञ्चित वदने । प्रिय हृदयार्पित नूतन मदने ॥
स्थिरचपलावलि वन्दित देहे । हरिभणिते वस मञ्जुल गेहे ॥

॥ श्रीसम्प्रदायाचार्य—श्री हर्याचार्य स्वामिनः ॥

श्रीजानकी गीतम्

श्री रघुनाथ जी की प्राणेश्वरी हे श्री जानकी जी ! आपका जय हो-जय हो ! ब्रह्मा-शिव-सनकादिक-शुकदेवादि आपकी महनीयता का वर्णन करते हैं। हे देवि ! मैं आपकी शरण आया हूं, क्यों कि आपकी करुणा तो त्रिभुवन के गुरु प्रभु भी चाहते हैं, चरणों के नखों की द्युति बनकर मानों चन्द्रमा ही श्री चरणों में प्रणाम कर रहा है। आप अपने प्राणपति के चरणों की परिचर्या में कभी भी आलस्य करती ही नहीं है, आपके मुख की दन्त पंक्ति की किरणों शिखर पर सूर्य की किरणों की भाँति चमक रही हैं। आप अपने प्रियतम के हृदय में नित्य नवीन कामना अर्पित कर रही हैं, बिजली मानों स्थिर होकर आपके श्रीअङ्ग में विराजती हैं, श्री हर्य्याचार्य जी कहते हैं कि आप हमारे मञ्जुल मानस मन्दिर में निवास करें ॥

॥ श्रीसम्प्रदाय के परमाचार्य श्रीहर्य्याचार्य प्रणीत यह श्रीजानकी गीत है ॥

श्रीसीतांगजा षोडश यूथेश्वरी स्तोत्रम्

श्रीचन्द्रकला-१—

सीमा सौभाग्य शोभा सकल गुणकलापूर्णचन्द्राननाभा-
श्रीरामानन्दरागारमणा रसमयी सर्वदानन्ददात्री ॥
श्रीसीताकान्तकान्ता प्रियतमपरमा प्रेमपूर्णाभिरामा-
सेव्या सर्वेश्वरी सा सकल युवतिभिः मुख्यचन्द्राकलाख्या ॥
जानक्यांशकला कलापमधुरा सौन्दर्यसीमा परा-
प्रेष्ठा प्रेष्ठतरा प्रसन्नवदना यूथेश्वरी सौख्यदा ।
भक्ताभीष्टकरा प्रमोदनिलया रामप्रिया प्रेमदा-
ख्याता चन्द्रकलाभिधा जयति सा सौभाग्यसम्पत्तिदा ॥२॥

श्रीप्रसादा-२—

श्रीमद्रामप्रसादसाधनकरी सौन्दर्यसच्चिन्मयी-
सर्वाशापरिपूरणी रसवहा वैराग्यराग प्रदा ।
प्रेमानन्दस्वरूपिणी परपदप्राप्त्यैकनिः श्रेणिका-
श्रीसीता प्रणय प्रदान निरता श्रीमत्प्रसादाभिधा ॥३॥
विद्याचारुतरा प्रसन्नवदना वेद्या सुयोगेश्वरैः-
संसेव्या सुसुरेन्द्र वन्दितपदा वेदान्त विद्यामयी ।
ध्येयाराम पदाब्ज भक्तिरचनानन्द प्रदानोद्यता-
सीतायाश्च कृपाकटाक्ष कलिता सेव्या प्रसादाभिधा ॥४॥

श्रीविमला-३—

श्रीसौन्दर्यसुखालया रसमयी लावण्यदा लासिनी-
लीला लोलकलाकलाप चतुरा चन्द्रप्रभोल्लासिनी ।
श्रीरामस्य सदैव संप्रणयिनी यूथेश्वरी सौख्यद.-
जयति श्रीविमलाभिधा रसमयी सान्निध्यदा सर्वदा ॥५॥
विद्युत्स्निग्धनिभाङ्ग कोमलतरा सन्तप्त स्वर्णाम्बरा-
श्रीसीतापरिचारिका प्रियसखी रामप्रिया सर्वदा ।

सौन्दर्यैकनिकेतना रसकला कल्याणदा कोमला-
सेव्या श्रीविमलाभिधा प्रणयिनी सङ्गीत काव्येष्टदा ॥६॥

श्रीमदनकला-४--

क्रीडालोलकलाकदम्बनिलया कल्लोलिनी कामदा-
कर्पूराभ कुमुत्प्रसन्नवदना कादम्बिनी सन्निभा।
नित्यानन्द निचोल भूषणधरा नानानुभावप्रदा-
सेव्या श्रीमदनकलाख्य रमया भाव्यास्तु भूतिप्रदा ॥७॥
प्रेमानन्दविलासिनी प्रियसखी प्राणेशि प्रेमप्रदा-
विद्युद्भास्वर भाव्यभूषणभरा भावासु नव्या गुणैः।
श्रीरामस्य कृपाकटाक्षनिलया सन्नृत्यबाद्येरता-
सेव्या सा सततं सुरासरसिकैः श्रीमन्मदनमञ्जरी ॥८॥

श्रीविश्वमोहिनी-५--

विश्वारामपरा विमोहनकरी विश्वैक वन्द्याश्रया-
विद्यावेद विधायिनी विश्रुतरा विश्वैक बीजालया
वेद्या सा सहजानुराग जननी विद्या रसालम्बिनी-
श्रीमद्विश्वमोहिनी भजसखे यूथेश्वरीं सर्वदा ॥९॥
श्रीरामाप्तिकरीं रसैकनिलयां रम्यां रमा सङ्गिनीं-
विद्यावेद विधान तत्त्व निलयां ज्ञानैक गम्यां पराम्
शश्वद्रामप्रसादिनीं परतरां भक्त्यैकवेद्यां शुभां-
वन्दे विश्वविमोहिनीं प्रियसखीं सीतापतेर्वल्लभाम् ॥१०॥

श्रीउर्मिला-६--

श्रीमच्छीलस्वभाव वैभवपरां सद्रूपिणीं सत्क्रियां-
शश्वत्केलिपरां परात्परतमां प्रेमाम्बुपूर्णां कलाम्
चन्द्राभां चपलायुतद्युतिवर्तीं चाम्पेय भूषोज्ज्वलां-
चम्पाभां वसुनेत्र बाणतरलांध्यायाम संचोर्मिलाम् ॥११॥
सौभाग्यैक निकेतनां भयहरां भव्यानुभूतिप्रदां-
गौराङ्गीं शरदिन्दु सुन्दरमुखीं दिव्याङ्गभूषावृताम्

श्रीसीताप्रणयप्रद प्रणयिनीं सद्भक्ति सम्पद् प्रदा–
ध्याये नित्यमनन्य मानसप्रदां श्रीशोर्मिलां चिन्मयाम् ॥१२॥

श्रीचम्पकला–७—

सच्चाम्पेय तनुद्युतिवर्तीं सौभाग्य विद्यामयीं–
श्रीमच्चारुतरां प्रसन्नवदनां चाम्पेय भासाम्बराम् ।
श्रीरामस्य प्रियां प्रसादजननीं मोदप्रदां माधवीं–
वन्देचम्पलतां विदेहतनयां पार्श्वेस्थितां सुन्दरीम् ॥१३॥
श्रीमच्चारुतरां प्रकाशपटलैरारात्प्रभाभास्वरां–
वीणावादन तत्परां रघुपतेरानन्द सम्वर्धिनीम् ।
सङ्गीतागम नृत्य गीतनिरतां नित्यासु यूथेश्वरीं–
ध्याये चम्पलतां सदा प्रणतिभिः सर्वार्थदां सर्वदा ॥१४॥

श्री रूपकला–८—

सच्चिन्मोदवतीं मनोद्भवमदोन्मत्तेभमुन्मादिनीं–
प्रोत्तुङ्गस्तनशीलकञ्चुककचैराच्छादितां सद्भ्रुवाम् ।
शृङ्गारैकवहां प्रमुदया संपूरयन्तीं सदा–
वर्धन्तीं वरचारु रूप सुकला सञ्चारिणी सर्वदा ॥१५॥
श्रीमद्रूपकलेति रूपमधुरा सौभाग्य माङ्गल्यदा–
सर्वाशा परिपूरिणी सुचरिता यूथेश्वरी शर्मदा ।
चार्वङ्गी रुचिरेक्षणा विधुमुखी सौदामिनी सन्निभा–
वन्देराघव पादपद्म निपुणा सेवापरा नित्यशः ॥१६॥

श्री हेमा–९—

श्रीहेमा हेमवर्णा हरितमणिनिभा वस्त्रभूषाभिरामा–
तारुण्यश्री रामवामा विकसितवदना विद्युद्दामासुदामा ।
श्रीसीताराम लीला विरचनचतुरा चित्रिणी चित्रधामा–
वन्दे वेदवतीं मृदङ्ग निपुणां सङ्गीत विद्यारताम् ॥१७॥
सौभाग्यैकनिकेतना हरिहर ब्रह्मादि संसेविता–
स्वर्धामा विबुधंडिता विधुमुखी रामप्रियाऽऽरामदा ।

संसेव्या सुखदा सुपीक निलया शृङ्गारधारामयी—
श्रीहेमाख्या हेम भूषणाधरा ध्यायेम सर्वेष्टदा ॥१८॥

श्री क्षेमा-१०—

श्रीक्षेमाक्षेमरूपा क्षितिपतिरमणी रागिणी रामवामा—
दिव्यादामाभिरामा मणिमयमुकुटा मञ्जुमुक्ता ललामा ।
सेव्याधर्मार्थकामा कलिकलुषहरा पूर्णकारुण्यधामा—
श्रीसीतापार्श्वगामा मधुरिमसुखमा भासिनी रामवामा ॥१९॥
भाग्येशी भव्यरूपा भुवनपतिनुता नर्महास्यैः स्वभिज्ञा—
सेव्या सा रामवामा रतिपतिरमणी तुल्यरूपा परेशी ।
हरिणाक्षी हरिलोचना हरिमुखी हर्म्येषु संसेविता—
श्रीसीतापद पद्मगन्ध मधुपा क्षेमा सदा भावये ॥२०॥

श्री पद्मगन्धा-११—

श्रीदेवी पद्मगन्धा प्रहसितवदना हर्षदा कामिनीनां—
सर्वाशा पूरणी सा प्रकटित परमाह्लाददा शोभनाङ्गी ।
श्रीसीतावामपार्श्वे सरसगुणकला दर्शयन्ती प्रसन्ना—
सारङ्गी वादयन्ती विविधरसमयीं रामवामां भजेऽहम् ॥२१॥
सम्यक् सुष्ठुतरां प्रसन्नवदनां विद्योत्तमानप्रभां—
नानाभूषण भूषितां मृगमदा संलिप्तपीनस्तनीम् ।
नाना गान कलापनिचयैः सम्वर्धयन्तीं मुदं—
ध्याये भक्तजयेप्सितार्थ फलदां श्रीपद्मगन्धांश्रियम् ॥२२॥

श्री सुलोचना-१२—

सुलोचना चारु विशाल नेत्रा, विद्युन्निभा लोककटाक्षपातिनी ।
विनोदशीला विबुधार्तिहारिणी, पुनातु मां सर्व सुखाप्ति कारिणी ॥२३॥
चन्द्रानना सकलसौख्यप्रदानदक्षा सीताकटाक्षकलनैक रसाब्धि स्वच्छा ।
श्रीरामचन्द्रमुखचन्द्र चकोरिकेयं सुलोचनां शीलमतीं नतोऽस्मि ताम् ॥२४॥

श्री वरारोहा-१३—

वरारोहा साध्वी सकलविधि कैङ्कर्य निपुणा मृगाक्षी मीनाक्षी गणनिचय सौभाग्य जननी

सदा वन्द्याऽनिन्द्या निखिल सुख संघात निलया–
भजे सीता प्रीता सुरस रसिका राम रमणी ॥२५॥
सुसेव्या संवेद्या सकल सुखसन्धान निरता–
सदा सीतारामे भुवनमभिरामे रसवती ।
मनोऽभ्या कर्षन्ती विपुल कथया कामकलया–
वरारोहा देवी जयति जयदाजीवन करा ॥२६॥

श्रीलक्ष्मणा–१४–

नमो लक्ष्मणा लक्षणाढ्या सुशीला सदाराम लीलासु साहित्य ।
किशोरीकला कौशला केलिरूपा भजेऽहर्निश रामप्रीत्यैकपात्री ॥२७॥
सदा जानकी जानि सेवानुरक्ता परेष्टा प्रिया मुख्ययूथेषु मुख्या ।
महानाटके सर्वसाहित्यपूर्णा भजे लक्ष्मणां लक्ष्मणप्राणरूपाम् ॥२८॥

श्रीसुभगा–१५–

ध्याये श्रीसुभगां प्रसन्नवदनां चन्द्रोज्ज्वलां चन्द्रिकां–
सर्वालङ्कृति रम्यरक्तवसनां विद्युन्निभां सुन्दरीम् ।
सौभाग्यैक निकेतनां प्रियसखीं श्रीजानकीजीवनां–
साध्वीं सर्वसुखावहां प्रणतिभि वन्दे रमारञ्जिनीम् ॥२९॥
सच्छास्त्रार्थकदम्बकाननमहावादेषु तत्त्वेश्वरीं–
नानातर्ककलाप कल्पनपरां पाण्डित्यदां पण्डिताम् ।
नानैश्वर्य प्रदान ज्ञानपरमा भक्त्यैक भाव्यां शिवां–
सेवे श्रीसुभगां–भजामि नितरां श्रीराम रामप्रियाम् ॥३०॥

श्रीचारुशीला–२–

श्रीरामस्यप्रियां परात्परतरां यूथेश्वरीं जानकी–
जानेर्नित्य प्रसाददाननिरतां श्रीशेशसम्भाविनीम् ।
सौन्दर्यैकनिकेतनां रसकलां कल्याणदां कोमलां–
सर्वैशैरभिनन्दितां रसमयीं श्रीचारुशीलांभजे ॥३१॥

॥ इति श्रीमद्रामसखेन्द्र श्री सीताप्रसाद स्वामि विरचितं श्री सीताङ्गजा सखि
यूथेश्वरी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

❀ श्रीसीता सहचरीभ्यो नमः ❀

॥ श्रीसीताङ्गजा षोडश यूथेश्वरी स्तोत्र ॥

१- श्री चन्द्रकला जीः—

सम्पूर्ण सौभाग्य की शोभा की सकल गुणगणों की तथा कलाओं की सीमा-पूर्ण चन्द्र के समान मुख वाली-श्रीराम के अनुराग के आनन्द में निमग्ना-रसमयी-सर्वदा-सच्चिदानन्द प्रदायिनी-श्री सीताकान्त प्रभु श्रीराम की कान्ता श्री जानकी जी की परम प्रियतमा-प्रसपूर्णा परम मनोहर-सभी युवतियों द्वारा परम सेवनीय, सभी सखी सहेलियों में मुख्य सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकला जी ही परम सेव्य हैं ॥ १ ॥ श्री जानकी जी की अंशकला से प्रकट हुई, बोलने में मधुर मनोहरा-सौन्दर्य की अन्तिम सीमा-प्रियतम को परम प्यारी-सभी प्रिय सखियों में सर्व श्रेष्ठा प्रसन्नवदना-सुख प्रदायिका-भक्तों का अभीष्ट पूर्ण करने वाली-प्रमोद आनन्द की भण्डार श्रीराम प्रिया-प्रेम प्रदायिनी-सौभाग्य सम्पत्ति प्रदान करने वाली यूथेश्वरी श्री चन्द्रकला जी की सदैव जय हो ॥ २ ॥

२- श्री प्रसादा जीः—

श्रीराम जी की प्रसन्नता को प्राप्त कराने वाली-सच्चिदानन्द सौन्दर्यमयी-सभी आशाओं को पूर्ण करने वाली-प्रेमरस प्रवाहिनी-वैराग्य तथा अनुराग प्रदान करने वाली-प्रेमानन्द स्वरूपिणी-परम पद की प्राप्ति करने के लिये सुन्दर सीढ़ी स्वरूपा-श्रीसीताजी प्रणय प्रदान करने में लगी हुई श्रीमती प्रसादा नाम की यूथेश्वरी की जय हो ॥ ३ ॥ अत्यन्त सुन्दर विद्यावती प्रसन्न वदना-योगेश्वरों द्वारा जानने योग्य तथा सुसेवनीय-सुरेन्द्रों द्वारा वन्दनीय चरणों वाली वेदान्त विद्यामयी-ध्यान करने योग्य-भक्तजनों को श्रीराम के चरण कमलों में अचल आनन्द प्रदान करने के लिये सदा उद्यत, श्री किशोरी जी की कृपा कटाक्ष प्राप्त करने के लिये श्री प्रसादा जी सदैव सेवनीया हैं ॥ ४ ॥

३- श्री विमला जीः—

श्री सौन्दर्य तथा सुख की मन्दिर, रसमयी, लावण्य प्रदात्री, उल्लासिनी, लीला कला कलाप में अतिचतुरा, चन्द्रप्रभा को उल्लासित करने वाली, श्रीरामजी की सदैव प्रियकरी सौख्य प्रदा सर्वदा श्रीयुगल प्रभु की सानिध्यता प्रदान कराने वाली यूथेश्वरी श्री विमला जी की सदा जय जयकार हो ॥ ५ ॥ बिजली को विनिन्दित करने वाला दिव्य प्रभा सम्पन्न सुन्दर शरीर वाली, अत्यन्त कोमल- तपाये हुए सोने के समान चमकते हुए वस्त्रों से अलंकृत, श्री सीता जी की परिचारिकाओं की प्रिय सखी, सर्वदा श्री रामप्रिया, सौन्दर्य की एकमात्र निकेतन, कल्याण प्रदा, रसकला की अधिष्ठात्री, सङ्गीत तथा काव्य में इष्ट सिद्धि प्रदान करने वाली कोमलाङ्गी अत्यन्त विनय विवेक सम्पन्न श्री विमला नामक यूथेश्वरी जी सेवनीय है ॥ ६ ॥

४- श्री मदनकला:—

क्रीड़ा कौतुक की ललित कलाओं की मन्दिर तथा उन्हें कल्लोलित करने (लहराने) वाली; कामनाओं को पूर्ण करने वाली, कपूर तथा कुमुद के समान गौर वर्णा, प्रसन्न वदना, कादम्बिनी के समान, नित्य नवीन रहने वाले वस्त्र आभूषण धारण करने वाली नाना प्रकार के भाव, अनुभाव विभावना को बढ़ाने वाली, विभूतिद्वय प्रदान करने वाली श्री मदनकला जी को श्रीरमा के सहित सेवा करनी चाहिये ॥ ७ ॥ प्रेमनन्द विलासिनी, प्राणेश्वरी श्री जानकी जी की प्रिय सखी, श्रीसीता प्रेम प्रदायिनी विजली के समान चमकते हुए प्रिय भूषणों से विभूषित नवीन गुणों से भावना करने योग्य श्रीरामजी के कृपा कटाक्ष के अनुसार उनकी इच्छानुसार नृत्य गान में लगी हुई श्रीमदन मञ्जरी यूथेश्वरी की रास रसिक सज्जनों को सतत् काल सेवा करनी चाहिये ॥ ८ ॥

५- श्री विश्वमोहिनी:—

विश्व को आराम मिले इसकी व्यवस्था में सदैव परायण तथा विश्व को मोहित करने वाली, अखिल विश्व की वन्दनीय तथा विश्व को आश्रय प्रदान करने वाली, वेद विद्या का विधान करने वाली, विभुस्वरूपा सर्व व्यापक, विश्व के बीजों का एकमात्र भण्डार, परम वेद-नीया, सहज अनुराग उत्पन्न करने वाली, विद्या रस की आलम्बिनी, ऐसी यूथेश्वरी श्रीमती विश्व मोहिनी जू का हे सखे ! सर्वदा भजन कर ॥ ९ ॥ श्रीरामजी की प्राप्ति कराने वाली रसों की भण्डार परम मनोहर, श्रीरमा जू की सङ्गिनी, वेद विधान विद्या तत्त्व का मन्दिर एकमात्र ज्ञान के द्वारा गम्य, पराशक्ति, निरन्तर श्रीराम को प्रसन्न करने वाली, परात्परा, एक भक्ति के द्वारा ही जानने योग्य, शुभ स्वरूपा, श्री सीतापति की प्राण वल्लभा जू की प्रिय सखी श्री विश्व मोहिनी जू को मैं वन्दना करता हूँ ॥ ४ ॥

६- श्री उर्मिला:—

शील, स्वभाव, वैभव, सत्क्रिया सुन्दर स्वरूप, इन सबसे सम्पन्न श्रीमती परात्परतमा-प्रेमरस सुधा पूर्ण कलाओं से निरन्तर केलि कौतुक करने में परायण, चन्द्रमा के समान द्युतिमती, हजारों विजली को लज्जित करने वाली प्रभा संयुक्त, चम्पक वर्णी, उज्जवल भूषणों से विभूषित, चपल नेत्र वाली श्री उर्मिला जी का हम ध्यान करते हैं ॥ ११ ॥ सौभाग्य की एकमात्र निकेतन (घर) भय हरण करने वाली भव्य भगवदीय अनुभूति प्रदायिका, गौराङ्गी शरद् चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखवाली, दिव्य अङ्ग भूषणों से सजी हुई, श्रीसीताजी के प्रेम प्रणय को प्रदान करने वाली, विनय प्रेम भरी, सद्भक्ति की सम्मति देने वाली, चिदानन्दमयी नित्य अनन्य भक्ति से मन को एकाग्रता प्रदान करने वाली श्रीउर्मिलाजी का मैं ध्यान करता हूँ ॥ १२ ॥

७- श्री चम्पकला:—

सुन्दर चम्पा के समान गौर अङ्ग की द्युति से सम्पन्न, सौभाग्य तथा विद्या संयुक्त-अत्यन्त मधुर सुन्दर प्रसन्न मुख वाली चम्पाई रङ्ग के चमकते हुए वस्त्र पहने हुए, श्रीरामप्रिया

जू की कृपा प्रसाद को उत्पन्न करने वाली; आमोद प्रमोद देने वाली, माधवी, परम सुन्दरी, श्री विदेह राजकुमारी जू के पास में विराजमान, श्री चम्पकलता जू की मैं वन्दना करता हूँ ॥ १३ ॥ परम रम्य चारु प्रकाश पुञ्ज से चारों ओर प्रभा ज्योति को फैलाने वाली, वीणा बजाने में निमग्न श्री रघुपति के आनन्द को बढ़ाने वाली सङ्गीतगान नृत्यादि नित्य महोत्सव के सुख में परायण, प्रणतजनों को सर्वार्थ प्रदान करने वाली, श्री चम्पकलता यूथेश्वरी का मैं सदा सर्वदा ध्यान करता हूँ ॥ १४ ॥

८- श्री रूपकलाः—

सच्चिदानन्द मयी मदोन्मत्त मातङ्ग के समान मनोभव कामदेव के उन्मत बनाने वाली अपने उन्नत उरोजों को नील कञ्चुकी से आच्छादित कर छिपाने वाली, सुन्दर भौंहों वाली-शृङ्गार रस के प्रवाह को प्रवाहित करने वाली, प्रमोदानन्द को सदैव पूर्ण करने वाली, अपनी रूप माधुरी को वरसाती हुई सर्वत्र सर्वदा विचरण करने वाली, श्री रूपकला जो को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १५ ॥ श्रीमती रूपकला; रूप माधुर्य, सौभाग्य तथा माङ्गल्य को प्रदान करने वाली है, सर्व आशायें परिपूर्ण करती हैं; सुन्दर चरित्र वाली है । कल्याण प्रदायिनी है। सुन्दर सुचारु अङ्ग वाली हैं, परम रुचिर उनके नेत्र हैं, चन्द्रमा के समान मुख है, बिजली के समान चमक रही हैं, श्री राघवेन्द्र जू के चरण कमलों को सेवा में परायण श्री यूथेश्वरी जू की मैं नित्य वन्दना करता हूं ॥ १६ ॥

९- श्री हेमाः—

श्री हेमा हेम के समान वर्ण वाली हैं, हरितमणि के समान वस्त्र भूषण पहने हैं, अत्यन्त मनोभिरामा हैं, तारुण्य सम्पन्न हैं । श्रीराम की प्रिय सखी हैं, विकसित मुख वाली हैं, बिजली के समान चमकती हुई सुन्दर मालायें पहिरे हुए हैं, श्री सीतारामजी की विचित्र लीला रचना की चातुरी में प्रवीण हैं, चित्र विचित्र मन्दिर में विराजती हैं, मृदङ्ग वादन तथा सङ्गीत विद्या में निपुण हैं. ऐसी वेद ज्ञानवती श्री हेमा जी को मैं वन्दना करता हूं ॥ १७ ॥ सौभाग्य की मन्दिर हरि-हर ब्रह्मादि से सुसेविता, स्वर्ग की सुरवामा तथा विबुधों द्वारा पूजनीया, विद्युन्मुखी, श्रीरामजी को आराम देने वाली, अमृत की एकमात्र खानि, शृङ्गार रस को निर्मल धारा सदैव सुखदा, सर्व अभीष्ट प्रदायिनी, हेमभूषण धारण करने वाली सदैव सुसेव्या श्रीहेमाम्बा का हम ध्यान करते हैं ॥ १८ ॥

१०- श्री क्षेमाः—

श्री क्षेमा क्षेम (कुशल आनन्द) स्वरूपा है, राज राजेन्द्र श्रीराम की रमणी श्री किशोरी जी को प्रसन्न करने वाली हैं, दिव्य मालायें, मणिमय चन्द्रिका, मञ्जुल मुक्ता की ललित लड़ियों के गुच्छों से भूषित हैं, अर्थ धर्म की कामना से सेवनीय हैं, कलियुग के कलुष को हरण करने वाली है, करुणा रस की पूर्ण धाम हैं, श्री सीता जी के पास में रहने वाली हैं; मधुर सुषमा को लहराने वाली श्रीराम की प्रिया सखी हैं, ॥ १९ ॥ भाग्य की ईश्वरी-

भव्य स्वरूपवती, भुवन पति भी जिसको नमस्कार करते हैं, व्यङ्ग विनोद हास विलास में अति प्रवीण हैं, रति पति की रमणी के समान स्वरूप सौन्दर्यवती, परमेश्वरी, मृगनयनी श्रीहरि के लोचन में निवास करने वाली, हरिमुखी, हर्य्यक्षों द्वारा सुसेविता श्री सीता चरण कमल की मकरन्द रस लोलुप भ्रमरी ऐसी श्री क्षेमा जी की मैं सदा भावना करता हूं ॥ २० ॥

११-पद्मगन्धाः—

श्री पद्मगन्धा जी का मुख हमेशा हँसता ही रहता है, सभी कामिनीओं को हर्ष बढ़ाती रहतीं हैं, सभी आशाऐं पूर्ण करती हैं, परम आह्लाद को प्रकट करती हैं, शोभा सौन्दर्य पूर्ण शरीर वाली है श्री सीता जी के वाम भाग में विराजमान होकर सरस गुण कलाओं का प्रदर्शन करती हुई सर्वदा सुप्रसन्ना रहतीं हैं। विविध रसमयी सारङ्गी बजाती हुई आनन्द बरसाती हुई श्रीराम प्रिया पद्म गन्धा का मैं भजन करता हूं ॥ २१ ॥ सम्यक् प्रकार के परम सुन्दर प्रसन्नवदना उत्तम विद्याओं से प्रकाशित नाना भूषणालङ्कारों से अलंकृता अपने सुन्दर पीन उरोजोंपर कस्तूरी चन्दन को लगाईहुई, नानाप्रकार के राग-गान ताल आलाप से मोद प्रमोद बढ़ाने वाली श्री पद्मगन्धा जी का मैं ध्यान करता हूँ ॥ २२ ॥

१२-श्री सुलोचना जीः—

श्री सुलोचना जी के सुन्दर विशाल नेत्र हैं, विजली के समान गौराङ्गी हैं, चञ्चल नेत्र कटाक्षपात करने वाली हैं, विनोद शीला है, देवताओं का संकट हरण करने वाली हैं। सर्व सुखों की प्राप्ति कराने वाली वह श्री सुलोचना हमको परम पवित्र बनावें ॥ २३ ॥ चन्द्र मुखी प्रभुको सर्व प्रकार का सुख प्रदान करनेमे दक्षा, श्रीसीता जी की कृपा कटाक्ष की चित वन से जिसका प्रेमरस सागर अत्यन्त स्वच्छ बना हुआ है, श्री रामचन्द्र जी के मुखचन्द्र की जो चकोरी बनी हुई हैं, ऐसी शीलमती श्री सुलोचना जी को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ २४ ॥

१३--श्री वरारोहाः—

श्री वरारोहा परम साध्वी, सकल प्रकार के भगवत् कैङ्कर्य में अति प्रवीण हैं, मृगनयनी तथा मीनाक्षी युवतियों के यूथ के सौभाग्य का उदय करने वाली हैं, निन्दनीय दूषण हीन, सदैव वन्दनीय, सम्पूर्ण सुख समूहों की खान श्रीराम रमणी सीता जिस पर सदा प्रसन्न रहती हैं ऐसी सुरस रासिका श्री वरारोहा जी का मैं भजन करता हूं ॥ २५ ॥ जो सुसेव्या है, भली भाँति जानने योग्य हैं, सकल सुखों को संग्रह करने में परायण हैं भुवनाभिराम श्री सीताराम में सदैव प्रेमरस रखने वाली हैं मन को अत्यन्त आकर्षण करती हुई, अनेक कथा वार्ता-काम कला से प्रभु को प्रसन्न करने वाली हैं, ऐसी जीवन का विजय कराने वाली, श्रीवरारोहा देवी की सदा जय हो ॥ २६ ॥

१४--श्री लक्ष्मणा--

सर्व सुलक्षण सम्पन्ना, सुशीला, सदैव श्रीरामलीला के साहित्य को सजाने वाली रस सारज्ञा, श्री किशोरी जी की कला कौशल की प्रत्यक्ष स्वरूप श्रीराम प्रीति की एकमात्र सुभा-जन श्री लक्ष्मण जी का अहर्निश भजन करता हुआ नमस्कार करता हूँ ॥ २७ ॥ श्री जानकी

वल्लभ जू की सेवा में सर्वदा अनुरक्त प्रभु की प्रिय सखियों के यूथों में मुख्य सखी महा नाटक तथा सर्व साहित्य के गुणों से परिपूर्ण, श्री लक्ष्मण जी की प्राण स्वरूपा श्रीलक्ष्मणाजी का मैं भजन करता हूं ॥ २८ ॥

१५--श्री सुभगाजी

प्रसन्न मुखी, चन्द्र के समान उज्वला चन्द्रिकादि सर्वालङ्कार से अलंकृत, रमणीय लाल वस्त्र को धारण किये हुए, बिजली के समान गौराङ्गी सुन्दरी, सौभाग्य के मन्दिर, श्रीजानकी जी की जीवन प्राणप्रिय सखी लक्ष्मी जी को भी प्रसन्न करने वाली, सर्व सुख सम्पन्ना, साध्वी श्री सुभगा जी को नमस्कारादिकों द्वारा मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २९ ॥ सर्व सत् शास्त्रों के अर्थ समूह रूपी गहन वन के तत्व को जानने वालों में जो सर्वपरि हैं, नाना तर्क-वितर्क-कल्पना कला के पण्डितों को भी पाण्डित्य प्रदान करने वाली है, नाना प्रकार के ऐश्वर्य तथा ज्ञान प्रदान करने वाली है, केवल एक भक्ति के द्वारा ही भजनीय कल्याण स्वरूपा श्री रामरमणी श्रीसीताजी की प्रियसखी श्रीसुभगाजी का मैं सभी प्रकार से भजन करता हूँ ॥ ३० ॥

१६--श्री चारुशीला--

श्रीरामजी की परम प्रिया-श्री जानकी जी की सखियों में परात्परा यूथेश्वरी श्रीजानकी वल्लभ जू का कृपा प्रसाद दान देने में सर्वदा परायण- श्रीपति की भावना में प्रवीण सौंदर्य की एकमात्र निधान कोमल कल्याण प्रद रसकला के दान देने वाली-सर्वेशों द्वारा भी अभि-वन्दनीय रसमयी श्री चारुशीला जी का मैं भजन करता हूं ॥ ३१ ॥

"यह श्रीमद्राम सखेन्द्र स्वामि श्री सीताप्रसाद विरचित श्रीसीताज्ञजा षोडश यूथेश्वरी स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।"

॥ जय जय जनतारिणी सीते ॥

(गीत-गौरी-योगिया)

जय सगुणे जय त्रिगुणातीते, जय जय जन तारिणी सीते ।
जय जय योगिजनानां ध्येये, गेये च श्रुति गीते ॥
परिपालय मां महामाये । जय जय परमेश सहाये ॥
सकल शक्तिमयि मिथलाभूमौ घृत कमनीयक काये ।
कृत जनकयशो विस्तारे । सेवक हित करुणागारे ॥
रघुनन्दन नवघन सौदामिनि, भगवति सकलाधारे ।
जय भक्त गृहेऽर्पित वित्ते । कारित जन निर्मल चित्ते ॥
प्रीतिरस्तु नो भवती चरणे । शरणे मुक्ति निमित्ते ॥

-श्रीमैथिली रामायणे, बालकाण्डे ।

--महाकवि चन्दा झा ।

श्रीचन्द्रकलाष्टकम्

श्रीनारद उवाच--

वन्दे चन्द्रकलां देवीं वीणावादनतत्पराम् ।
रासवेश्मनि भावज्ञां जानकीप्रेमविह्वलाम् ॥१॥

सौशील्यादिगुणैर्युक्तां वात्सल्यरसभूषिताम् ।
दयार्द्रचित्तां सततं प्रणतार्तिविनाशिनीम् ॥२॥

सुन्दरीनृत्यहास्यास्यां तयोः हास्यवितन्वतीम् ।
भेदज्ञां हावभावानां रसानां रसरूपिणीम् ॥३॥

मां प्रापय च त्वं देवि ! राघवं राघवप्रियाम् ।
तवैव कृपयाजाता श्याम श्यामा हि भावना ॥४॥

रसाचार्योपदेशेन यत्किञ्चित् स प्रकाशते ।
सम्यक् न बुद्ध्यते भद्रे ! त्वदीयं रूपमद्भुतम् ॥५॥

कृपा कुरुष्व भावज्ञे ! प्राप्नुयामिष्ट भावनाम् ।
तवैव कृपया रामे ! दुःखहानिर्भविष्यति ॥६॥

नमो वाद्य प्रवीणायै चन्द्रकान्त्यै नमो नमः ।
नमो सीता प्रहर्षिण्यै विलासिन्यै नमो नमः ॥७॥

नमस्ते सर्व भावज्ञे चन्द्रायै च नमो नमः
नमो विद्या स्वरूपिण्यै कृपारूपिणि ते नमः ॥८॥

चन्द्रकलाष्टकं पुण्यं नारदेन प्रभाषितम् ।
यः पठेत् सततं भक्त्या तस्यभावो हि सिध्यति। ।८॥

शठाय परशिष्याय दाम्भिकायाऽहितात्मने ।
न दातव्यमिदं स्तोत्रं भावसिद्धिर्हि दुर्लभा ॥१०॥

॥ इति श्रीनारद पञ्चरात्रे श्रीनारद प्रोक्त श्री चन्द्रकलाष्टकम् सम्पूर्णम् ॥

।। सकारादि श्रीसीतासहस्रनाम-स्तोत्रम् ।।

[श्रीरुद्रयामल--तन्त्रोक्तम्]

सुरालये प्रधाने तु देवदेवं महेश्वरम् । शैलाधिपस्यतनया सम्यग् हरमुवाच ह ॥१॥

श्री देव्युवाच

परमेश परंधाम–प्रधानपुरुषेश्वर । नाम्नां सहस्रं सीतायाः विस्तरात् वद शङ्कर ! ॥२॥

श्री महादेव उवाचः—

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि नाममध्येसहस्रकम् । परंधामप्रदाविद्या चतुर्वर्गफलप्रदा ॥३॥
गुह्यात्गुह्यतमां देवि ! सर्वसिद्धयैकवन्दिता । अतिगुह्यतराविद्या सर्वतन्त्रेषु वेदिता ॥४॥
विशेषतः कलियुगे महासिद्धयौघदायिनी । गोपनीया प्रयत्नेन कस्मैचिन्नप्रकाशयेत् ॥५॥
विनाध्यानं-विनापूजा-विनाहोमं-विनाजपम् । विनापुष्पं–विनागन्धं विनादानं विनामखम् ॥६॥
सकृदुच्चरिताविद्या ब्रह्महत्यां व्यापोहति । एतद्विज्ञानमात्रेण सर्वसिद्धीश्वरोभवेत् ॥७॥
अप्रकाश्यमिदं सत्यं स्वयोनिरिव सुव्रते । रोधिनीविघ्नसंघानां मोहिनीपरयोषिताम् ॥८॥
स्तम्भिनी राजसैन्यानां वादिनी परवादिनाम् । कलौ पापसमाकीर्णे पठनान्मुक्तकिल्विषां ॥९॥
तस्मात्त्वं पठ देवेशि ! स्वर्गमोक्षप्रदायकम् । न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि शृणु पर्वतनन्दिनी ॥१०॥

देव लोक में सर्व श्रेष्ठ कैलाश में देव देव महादेव शङ्करजी से श्री पार्वती जी ने प्रेम पूर्वक पूछा--हे प्रधान पुरुषों में सर्वोत्तम प्रभो ! आज तो आप श्री सीता जी के सहस्रनाम विस्तार पूर्वक सुनाने की कृपा करें । श्री महादेव जी ने कहाः--

हे देवि ! श्री जानकी जी के अनन्तानन्त नामों में से केवल एक हजार नाम मैं आज सुनाता हूँ । यह अर्थ-धर्म-काम-मोक्ष देने वाली परा विद्या है, यह प्रभु का परम धाम भी प्रदान करती हैं । गुप्त से भी महागुप्त सर्व सिद्धियों से वन्दनीय अत्यन्त गोपनीय तन्त्रों द्वारा ज्ञात होने वाली महा विद्या है । विशेष कर कलिकाल में सम्पूर्ण महा सिद्धियों को प्रदान करने वाली है । अतः जिस किसी को नहीं कहनी चाहिये । गुप्त ही रखनी चाहिये । बिना ध्यान के-बिना पूजा के-बिना होम के-बिना जप के-बिना पुष्प चन्दन के तथा बिना यज्ञ के दान दक्षिणा के केवल एक बार श्रद्धा विश्वास से पाठ करने मात्र से ही ब्रह्म हत्यादिक महान पापों से छुटकारा दे देती है । इसके जानने से ही मनुष्य सर्व सिद्धियों का सम्राट् बन जाता है । अतः अपने गुप्त अङ्ग की भांति हे सुन्दर मुख वाली पार्वती ! इसको छिपा कर ही रखना

चाहिये। यह सभी विघ्नों को रोकने वाली है, स्त्रियों को मोहित करने वाली है, राजा की सेनाओं का स्तंभन करने वाली है तथा विवाद में प्रतिवादी को परास्त करने वाली है। पापों से भरे हुए कलियुग में पाठ करने मात्र से पावन करने वाली है। अतएव हे देवि! स्वर्ग तथा मोक्ष फल प्रदायक इस श्री सीतासहस्रनाम का पाठ तुम अवश्य करो। हे पार्वति! इसकी न्यास विधि का मैं वर्णन करता हूं सो तुम सुनों (श्लोक १ से १०)

अस्यसहस्रनामस्य ऋषिर्ब्रह्मा प्रकीर्तितः। छन्दोऽनुष्टुप् प्रोक्तश्च सीतादेवी प्रकीर्तिता ॥११॥
सोरमं बीजमाख्यातं कमलाशक्तिरीरिता। कीलकं पाशबीजेन विनियोगस्ततः परम् ॥१२॥
अथध्यानं प्रवक्ष्यामि सीतायाः परमाद्भुतम्। सर्वपापहरं दिव्यं सर्वकामफलप्रदम् ॥१३॥
आयुः कीर्तिकरंपुण्यं सर्वाघौघ विनाशनम्। ज्ञात्वा सम्यक् विधानेन न्यासजालंसमाचरेत्॥१४॥

ॐ अस्य श्रीसीतासहस्रनाममन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीसीतादेवतायैनमः! ह्रीं ह्रीं क्ली बीजाय नमः श्रींशक्तये नमः श्रां कीलकाय नमः ममसकलाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। अथध्यानम्—

इस श्री सीतासहस्रनाम के ब्रह्मा ऋषि है, अनुष्टुप् छन्द है। श्री सीता देवता है, ह्रीं-ह्रीं-क्लीं बीज है, कमला शक्ति है, श्रां कीलक है अभीष्ट मनोरथ की पूर्ति तथा श्रीसीताजी की कृपा प्राप्ति इसका विनियोग है। इसी से ऋष्यादि न्यास करके "श्रीसीतायै स्वाहा" इस मूल मन्त्र से अङ्गन्यास-करन्यासादिक करना चाहिये। अब हम श्रीसीताजी का परम अद्भुत सर्व पाप नाशक-आयु-कीर्ति तथा पुण्य प्रर्धक-सर्व विघ्न विनाशक-भक्त की सभी कामनायें पूर्ण करने वाला ध्यान वर्णन करते हैं (श्लोक ११ से १४)

ध्यायेज्जानकीं रम्यां मुक्ताहारसुशोभिताम्। अनन्तरत्नराचितां सिंहासन विराजिताम् ॥१५॥
उद्यत्सूर्यसहस्राभां दाडिमीकुसुमप्रभाम्। सुवृत्तनिविडोत्तुङ्ग कुचमण्डलराजिताम् ॥१६॥
अनर्घ्यं मौक्तिकस्फार हारभारविराजिताम्। नवरत्नप्रभाराजि ग्रैवेयवर भूषणाम् ॥१७॥
श्रुतिभूषामनोरम्यां सुगण्डस्थल भूषणाम्। नमामि परमां देवीं रामवामाङ्कगां शिवाम् ॥१८॥

मुक्ताहार से सुशोभित, अनन्त रत्नों से जड़े हुए सिंहासन पर विराजमान-उदय होने वाले हजारों सूर्यों के समान प्रकाशित-अनार के फूल के समान अरुण प्रभा वाली-सुन्दर वक्षस्थल से सुशोभित-बहुमूल्य मणि मुक्ताओं के हार धारण किये हुए-नव रत्नों की प्रभा से चमकता हुआ कण्ठ भूषण गले में पहने हुए-मनोहर कर्णफूल कान में शोभता है ऐसी परम कल्याण स्वरूपा श्रीराम के वाम भाग में विराजमान श्री जानकी जी का ध्यान करके मैं प्रणाम करता हूं। इस प्रकार का ध्यान कर हृदय में ही मानसिक पूजा के उपचारों से उनके श्री चरणों का पूजन करके भक्तजन इस स्तोत्र का पाठ करे। तत्पश्चात् श्लोक १८३ तक सम्पूर्ण पाठ करके तब फलश्रुति पढ़े (श्लोक १५ से १८)

इति ध्यात्वा ह्युपचारैस्सम्पूज्य स्तोत्रकं पठेत् । ॐसीता सीमन्तिनी सीमा सन्मन्त्रफल दायिनी
सत्या सत्यवती सामा सात्त्विकी सर्वमङ्गला । सत्प्रभावा सतीसाध्वी सत्कला सकलेश्वरा
समस्ता समदा सान्द्रा सान्द्रनीलसमप्रभा । सौभाग्यजननी सेव्या सौम्या सुन्दररूपिणी
संभ्रमा संभ्रमातीता सन्तुष्टफलदायिनी । सर्वोत्तुङ्गकला सर्वा सर्वेष्टा सत्कर्मप्रिया
शान्तिप्रिया शान्तिमती सीमन्तमणिभूषणा । सावित्री सन्मुखी सिद्धा शारदा च समप्रभा
स्वतन्त्रा सत्यसङ्कल्पा समदृष्टिफलप्रदा । सारङ्गसदृशा श्यामा सरसा शशिशेखरा
समाना सामगा शुद्धा समस्तसुर सम्मुखी । सर्वसम्पत्प्रदात्री च शमदा सिन्धुसेविनी
सरसीरुह मध्यस्था सरोवर विहारिणी । सरस्वती सुवर्णश्री श्रीजया शुभदायिनी
सर्वमाङ्गल्यजननी सार्वभौम प्रदायिनी । साम्राज्यकारिणी साम्रा साम्राज्यफलदायिनी
सत्यव्रता सत्यपरा सद्भावा सत्परायणा । सन्मार्गकर्त्री सम्मान्या सम्मानसुखदायिनी
सत्यज्ञानप्रदात्री च सुमनाराध्यपादुका । स्वर्णकान्ति समप्रख्या स्वर्णाभरण भूषिता
सत्सङ्कल्पप्रदा सज्या सुखी सौख्यवरप्रदा । संसारसागरारूढ संसारभय नाशिनी
सर्वार्थसाधिनी सर्वा शर्वाणी शङ्कर प्रिया । शाश्वतस्थानफलदा शासना शासनप्रिया
समता समतासारा सारस्वत फलप्रदा । सिंजानमणिमञ्जीरा सस्मिताऽधरपल्लवा ॥
सर्वसौन्दर्यनिलया सर्वसौभाग्यशालिनी । सज्जनानन्द निलया सत्कर्म फलदायिनी ॥
सूक्ष्मा सूक्ष्मगतिस्स्तुत्या सूक्ष्मज्ञानप्रदायिनी । सौदामिनी सुधादेवी सिन्धुरूपा च साम्बिका ॥
सिद्धिप्रदा सिद्धिबन्धु सिद्धेशी सिद्धसुन्दरी । सन्ध्येयत्री सन्ध्यजरा सन्ध्या तारुण्यलालिता ॥
शमदा शाङ्करी सेतु सुकोला सरसीरुहा । सोमेश्वरी सोमकला सोमपान सुसम्मता ॥
सौम्यानना सौम्यरूपा सोमस्था सोमसुन्दरी । सूर्यप्रभा सूर्यमुखी सूर्यजा सूर्यसुन्दरी ॥
सूर्यकोटि प्रतीकाशा सूर्यतेजोमयी सती । सोमकोटि प्रभा शोभा सोममण्डलवासिनी ॥
शतानन्दा श्रुतिधरा सुषुम्ना शोभनप्रिया । शोभावती सुशोभाढ्या शोभना सुभगा सुखा ॥
शताक्षी शम्बरध्वंसी सहस्राक्षी सहोदरी । सहस्रशीर्षा सर्वेशी सहस्रपदसंयुता ॥
सहस्राक्षी सुवस्त्राढ्या सहस्रभुजवल्लिका । शुभवस्त्रप्रिया सुन्दा शत्रुघ्नीशंतनुप्रिया ॥
शतानना च शर्वरी सहस्रपदपङ्कजा । शिशुपार्श्वनिलया शम्बरारि सुखप्रदा ॥
श्रान्तिहा सन्ततिः सत्या सन्तानफलदायिनी । श्रींकाररूपिणी श्रद्धा श्रेयदा श्रमनाशिनी ॥
श्रेष्ठा श्रेष्ठकरी श्रेया श्रुतिरूपा श्रुतिप्रिया । श्रेणीपति समाराध्या सुष्टुगान प्रियङ्करी ॥

स्थाणुपत्नि स्थितिकरा स्थितिस्था स्थितिवर्द्धिनी । श्रद्धावती च श्रमदा श्रद्धा भक्तिसमन्विता ॥
श्रीविद्या षोडशी षोढा षोढान्यासफलप्रदा । शुक्लाम्बरपरीधाना शुक्लगन्धानुलेपना ॥
शुक्लपुष्पप्रिया शुक्ला शुक्लाभरणभूषिता । स्वयंज्योतिः स्वयंकर्त्री स्वयमानन्दविग्रहा ॥
शेषादिशायिनी शेषा श्रीधरार्चितपादुका । संकर्षणप्रिया सभ्या सभामण्डलवासिनी ॥
सर्वेन्द्रिया-सर्वगतिः-सर्वसाक्षी-समुन्नता । संग्रामकारिणी-शैवा-सरयूतीरवासिनी ॥
सद्ब्राह्मण कुलोत्पन्ना-सच्चिदानन्दरूपिणी । सुगमा-सुगमप्रीता-सुगमध्यानतत्परा ॥
सोमपानरता-सोमा-शाम्भवी-शम्भुवल्लभा । समया-समयाचारा-संविज्ञानपरायणा ॥
सनातनप्रिया-शूरा-शूरश्रेणीविराजिता । श्रुतिस्मृतिप्रदात्रीच-श्रवणी-श्रावणप्रिया ॥
शतपत्रप्रिया-स्वैरा-सामन्तकुसुमार्चिता । सुबोधा-सुमतिः स्वेच्छा-सुरेशवरदायिनी ॥
सङ्गीतगानरसिका - सदास्वरविराजिता । सरिगमज्ञानफलदा - सदासन्तोषकारिणी ॥
सामवेदकृतोत्सङ्गा-सामगानप्रियङ्करी । श्रीवैष्णवसमाराध्या - स्वेच्छाविभवदायिनी ॥
स्वच्छन्दाचारनिलया-स्वेष्टा-स्वेष्टफलप्रदा । स्वच्छन्दा-सानुरूपस्था-साम्याधिकवरप्रदा ॥
शाकम्भरी-शिवाराध्या-सिंहाचलनिवासिनी । शिवङ्करी-शिवाङ्कस्था-शिवध्यानपरायणा ॥
सम्पादनप्रिया सम्या-सम्पूर्णफलदायिनी । शंखपात्राशिनी शङ्खस्वना-शङ्खगलाशशी ॥
शङ्खिनी-शङ्खवलया-शङ्खमालावती-समी । शम्बरी शाम्बरी-शम्बू-शम्बुकी-शबराशिनी ॥
शङ्खी-शङ्खवती-शङ्खा-श्यामाङ्गी-श्यामलोचना । श्मशानस्था-श्मशाना च श्मसानस्थल भूषणा ॥
शिवदाऽशिवहन्त्री च शकुनी-शङ्कशेखरा । सुमुखी-शोषिणी-शोषी-सौरी सौर्य्या सरासरी ॥
शपहा-शापहा-शम्पा सम्पत्-सम्पत्तिदायिनी । शृंगिणी-शृङ्गीफलभुक् शान्तिनी-शङ्करप्रिया ॥
शंका-शंकापहामंस्था-शाश्वता शीतला-शिवा । शिवस्था-शिवभुक् शाली-शिवाकरा शिवोदरी ॥
शायिनी-शयनी-शिसा-शिशुपः-शिशुपायिनी । शवकुण्डलिनी-श्वेता-शीकरी-शशिलाचना ॥
शिवकाञ्ची-शिवश्रीका-शिवमाला-शिवाकृति । सम्पातिः शंकुवसतिः शन्तनुः शीलदायिनी ॥
सिन्धुः स्वैरगतिः सैंध्री सुन्दरी सुन्दरानना । साधुः सिद्धा सिद्धिदात्री सिद्धासिद्धस्वरूपिणी ॥
सरः समा समाना च समाराध्या समस्तदा । समृद्धा समदा सरना सम्मोहा रूपदर्शना ॥
समितिः समिधा स्नेहा सुधारस समन्विता । समीरा संतता सप्ता साध्वी साधुसहायिनी ॥
शाद्वली संकृतिः शाढया सम्प्रदायप्रसाविनी । सुवना सुमनाचारा समाना सामसी शुभा ॥
श्रीमती श्रीमती श्रीमा श्रीशा श्रीपद्मवासिनी । सालंकृता शालुवेशी शालुवेश प्रियङ्करी ॥

सुलभा सुलभाराध्या सुधावा सुष्ठुमल्लिका ।
शुचिज्ञा सुमना शुद्धा शुचिध्यान समाश्रिता ॥७१॥

शुचिकर्मपरा शुभ्री शुचिनी सूचनप्रिया ।
सुज्ञाननिलया सुज्ञा सुबुद्धि सन्निवेशना ॥७२॥

सत्कालगामिनी स्पर्शा शिवमौलिकृताश्रया ।
स्तुत्यर्था सर्वदोषघ्नी सम्पक्वफलदायिनी ॥७३॥

संसर्गा संस्पृशा स्तुत्या स्तोकस्तोत्र प्रियङ्करी ।
सदया सर्वदास्तुत्ना सुधिया सर्श देवता ॥७४॥

सुरालया सुष्ठुरता सुपर्णी सुमनार्चिता ।
सद्बोधनिरता सस्या सव्यपाणिः सुरद्युतिः ॥७५॥

सांख्यायनमुनिस्तुत्या संख्यासाहित्यदायिनी ।
शाल्मली कुसुमप्रख्या शौंडीमेमार्जनीकर ॥७६॥

स्कन्दपुत्री स्कन्दमाता स्कन्दा स्कन्दवरप्रदा ।
स्फुटार्थफलदा स्फोटा स्फुटवक्त्रा स्फुटप्रिया ॥७७॥

संसारपंकनिर्मग्नसमुद्धरणपण्डिता ।
सान्निध्यदायिनी सन्धिः सुदशा सुमनोहरा ॥७८॥

सम्यक्समुच्चरी सस्या स्वर्भानुःफलदायिनी ।
शशका संस्मिता सस्मा सुमेरू शुचिभूषणा ॥७९॥

शुचिस्मिता सुनेत्रा च सुकोमला सुलक्षणा ।
शुण्डप्रिया शुण्डमाता शुण्डादण्ड विराजित ॥८०॥

सञ्चिता सञ्चरी सैवा सत्या भूपालसेविता ।
सुमेखला सुगुप्ता च सुगिरा च विस्तरा ॥८१॥

सकुन्तला च सद्गुण्या शठदर्पविहारिणी ।
स्मरपत्नीसमाराध्या स्मरारि सुखदायिनी ॥८२॥

सम्पूज्यदेवतारूपा सनकादिमुनिस्तुता ।
स्वभावचञ्चलापाङ्गी सनन्दनवरप्रदा ॥८३॥

साष्टाङ्ग नमनप्रीता सम्मीलन परायणा । शान्तोदरी स्वयंधामा शरणागतवत्सला ॥
शोभावती शुभाकारा शङ्करीर्धशारिणी । श्रोणा शुभ्रजला शुभ्र् शरसन्धानकारिणी ॥
शरावती शरानन्दा शरज्ज्योत्स्ना शुभानना । शलभा शूलिनी श्रोता सुनम्ना शुक्लवाहना ॥
शुभ्र् वारिप्पिड्वा षड्ऋतुश्च षडानना । षडाधारस्थिता शस्ना षडंजा षण्मुखप्रिया ॥
सन्यासधारिणी सैन्या सुधन्या सुष्ठुगोचरा । षडङ्गरूपसुरता सुरासुर नमस्कृता ॥
सर्ववासा सदोन्मत्ता सुस्तनी सागराम्बरा । सुव्यवस्था च सुरभिः सूर्यमण्डलमध्यगा ॥
सत्यार्थनिलया सत्या सत्पजिह्वाग्रवासिनी । सहस्रद्वयजिह्वाग्र शेषपर्य्यङ्कशायिनी ॥
सत्यार्चिमण्डलगता सव्या सूर्यविभूषणा । सारिका श्यामला स्मेरा स्मेरवक्त्रा शुकप्रिया ॥
शुकाध्ययन सम्पन्ना शुकी शुकवरप्रिया । शुक्राचार्य !प्रियाऽशोका शोकसन्तापहारिणी ॥
स्वर्गमोक्षसुखद्वारा सर्वकामसुखप्रदा । सप्तद्वीपात्मकाधारा सप्तसागरधारिणी ॥
सर्वपर्वाच पर्वाग्रा सप्तर्चि सुरसेविता । सद्योजीवा सर्वसन्ध्या सर्वलोकसमाश्रया ॥
सुधावक्त्रा सौमनस्या सम्भृता सुकृतालया । सर्वा सर्वजगत्पूज्या सर्वद्वन्दविनाशिनी ॥
संसारपाशविच्छिन्ना सर्वमन्त्रमयी सुरा । सुधासम्मृष्टसर्वाङ्गी सुधापङ्कजमालिनी ॥
सूर्याङ्गुली सुनक्षत्रा सौरी केशीस्वलङ्कृता । सर्वदेवसमुत्पन्ना सर्वदेवमयीश्वरी ॥
सूर्यजालांशुमध्यस्था संक्रमा संक्रमप्रिया । सर्वपौरुषवल्ली च सर्वधर्माधिकारिणी ॥
सप्तकोटीश्वरी विद्या संसारार्णवतारिणी । श्रीकण्ठा शितिकण्ठा च सुधाधाराम्बुवर्षिणी ॥
समुत्तीर्णा शक्तिरूपा सुशक्तिश्च सुधावती । सकलाख्यानसन्तुष्टा सोमसूर्याग्निमध्यगा ॥
सूक्ष्मसूत्रा सूक्ष्मरूपा सुसूत्रा सूत्ररूपिणी । सहस्रादित्यसंकाशा सहस्रनयनोज्ज्वला ॥
सहस्रमूला सहस्रेशी सर्वविघ्नविनाशिनी । सर्ववादित्र हस्ता च सर्वप्रहरणोद्यता ॥
सुरभी सौरभेयी च सुधाधारा सुधावहा । सर्वबन्धन सांच्छेत्री सर्वाभिचारनाशिनी ॥
सर्वसिद्धि महामाया सर्वार्थसाधिका । सर्वसंग्रामजननी सर्वशत्रुविनाशिनी ॥
सर्वैश्वर्यसमुत्पत्तिः सर्वलोकैकदीपिका । सर्वलोक सुखोत्पन्ना सर्वतः सुखदायिनी ॥
सर्वदुःखान्तकरणी सुभद्रा सर्वसात्त्विका । सहस्रशाखाफलिनी सर्वरोगनिषूदिनी ॥
शत्रुद्वेष्ट्री शत्रुहन्त्री शत्रुनामनिकन्दिनी । सकलंहा स्वरूपस्था सोऽहं शब्दस्वरूपिणी ॥
श्रीमन्त्रराजसद्दशा श्रीशैलपदगामिनी । श्रीचक्रराजनिलया श्रीमत्त्रिपुर सुन्दरी ॥
सुवासिन्यर्चनप्रीता सुकुमार प्रियङ्करी । सदोन्मत्ता सदातुष्टा शर्मदा शम्भुस्नेहिनी ॥

स्वस्था स्वभावमधुरा सदाशिवकुटुम्बिनी ।
सव्यापसव्यमार्गस्था सव्यसाव्री सहायिनी ॥ ११० ॥
सुदक्षिणा सुकौमारी सुमेना च सुरम्भिका ।
सर्वोपनिषद् स्तुत्या समीरतनयस्तुता ॥ १११ ॥
सत्यज्ञानानन्दरूपासामरस्य परायणा ।
सर्वोपाधि विनिर्मुक्ता सदाशिव पतिव्रता ॥ ११२ ॥
सर्वतन्त्रेश्वरी शक्ति सर्वगा सर्वमोहिनी ।
सर्वाधारा सुप्रतिष्ठा सदसद्रूपधारिणी ॥ ११३ ॥
सर्ववेदान्त संवेद्या सत्यानन्द स्वरूपिणी ।
शुभाचारा समाचारा सर्वोदक्षिण विराजिता ॥ ११४ ॥
सर्वादने प्रीतचित्ता सिन्दूर तिलकाङ्किता ।
सहस्रदलमध्यस्था सर्ववर्णोपशोभिता ॥ ११५ ॥
सर्वायुधधरा शुक्रा संस्थिता सर्वतोमुखी ।
स्वाहा स्वधा सहस्रारा सर्वमृत्युनिवारिणी ॥ ११६ ॥
सश्लाघायुधसम्पन्ना स्वाधिष्टाम्बुज संस्थिता ।
समस्त भक्तसुखदा शाकिन्येवास्वरूपिणी ॥ ११७ ॥
शिवदूती शिवाराध्या शिष्टेष्टा शिष्टपूजिता ।
संहृताशेषपाखण्डा सदाचार प्रवर्तिनी ॥ ११८ ॥
स्वात्मानन्दलयीसूक्ष्मा शुभाह्लादनचन्द्रिका ।
सद्यःप्रसादिनी साक्षी साक्षिणी साक्षिवर्जिता ॥ ११९ ॥
षडङ्गदेवतायुक्ता षाड्गुण्यपरिपूजिता ।
श्रुतिसीमन्तसिन्दूरी सदाशिवगृहस्थिता ॥ १२० ॥
सकलागम सन्दोहा शुक्तिसम्पुट मौक्तिका ।
सहस्रवदनप्रीता सर्वश्रम निवारिणी ॥ १२१ ॥
सत्यप्राज्ञापिका सत्या सार्वावस्थाविवर्जिता ।
संहारिणी सृष्टिरूपा सृष्टिकर्त्री शिवालया ॥ १२२ ॥

'सहल्ह्रीं' वीजरूपात्मा 'सौं' वीजनिलयात्मिका । 'सहौं' वीजसुसर्वाङ्गी सम्मोहन ऋषिप्रिया ॥
सकलं 'ह्रीं' महाविद्या शुक्राचार्य हृदिस्थिता । सात्त्मौलैकबीजस्या सच्छूद्रसमुपाश्रिता ॥
सदसद्रामनिलया शतरुद्रा शतानना । श्रीरामहृदयानन्द दशधानन विघातिनी ॥
रव्यौंबीजा श्रींबीजा श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीनिकेतना । स्वरन्यास स्वरूपस्था शुक्रान्ता शुक्रतर्पणा ॥
सुकर्पूरनिभासात्मा शुभस्थल निवासिनी । संध्याग्ररूपिणी संध्या संहिता संहितात्मना ॥
सृंनासमेदोस्थिगता सुकुत्ता सुहृदिस्थिता । फिंसुलो च भासौंफासक्रौं समदलात्मिका ॥
सक्रीं हंस स्वरूपस्था स क्लौं विहगरूपिणी । सुवर्णा वर्णा सर्वाङ्गी स्त्रींरूपा शास्त्रशालिनी ॥
सक्रमान्यासवेणी च स्वामिनी शिवपोषिणी । श्वेतातपत्रधरिणी सिद्धार्थी शीलभूषणा ॥
सत्यार्थिनी सन्ध्याभा च शची सिंही संहंकरी । संकोचार्थ प्रदर्शी च सुहृदबन्धुविहारिणी ॥
शिपिविष्ट प्रियाश्लोका सुकामा सज्जनाश्रया । सूक्ष्मेलवरघुरुपां स्थारलौरूपधारिणी ॥
शिवशक्तिसमाश्लिष्टा स्फुरद्व्योमान्तरस्थिता । सर्वरोगहराख्या च सौरभा चौर संस्तुता ॥
सम्पुटब्रह्ममध्यस्था सर्वसम्पुट मालिका । सर्वाशापूरणीश्लाघ्या श्लींबीजा श्लींपराशिला ॥
शिलास्वरूपतरणी शुक्लाङ्गी शुक्लभाषिणी । सदा शृङ्गनिवासी च सावर्णीतनयस्तुता ॥
सुरथा सुरथारूढा सुरथ ज्ञानदायिनी । स्त्रौंबीजवासिनी श्रांता श्रान्तसन्तापहारिणी ॥
श्मशानकाली सा गुह्या श्मशानागार भूषणा । शाक्तप्रिया शक्तिकला शाक्ता शक्तिपरायणा ॥
सखिवृन्दनिवासा च सखिगोष्ठी प्रियंकरी । शुभभोगाद्यसन्तुष्टा सर्वज्ञानाक्षमालिनी ॥
श्वेतद्वीपनिवासा च शुभ्रजाम्बूनदस्थिता । समाश्लेषातुरात्मा च सविद्युत्तेजरूपिणी ॥
साकारनिलया साका साकेतपुरवासिनी । सप्तव्याहृतिसंयुक्ता स्नुषा सुव्यक्तमालिका ॥
साम्बालया साम्बरूपा सुनागमणिभूषणा । सुजटा सौकला सौख्या सर्पमालविभूषणा ॥
संहार भैरवस्तुत्या स्मार्तहोमप्रियंकरी । सर्पिप्रिया समृद्धा सा सद्वैद्यभिषजप्रिया ॥
सौराष्ट्रदेशमध्यस्था सोमनाथेश्वराङ्गगा । स्वयंवरोत्सवप्रीता सौमित्रिप्रियभाषिणी ॥
शक्तिसङ्गमसन्तुष्टा शरत्ताराङ्गणस्थिता । सप्ताश्वरथसंस्था च श्वेतकुञ्जरवाहिनी ॥
श्रीमद्धेमवती श्वासा सुकुमारी सुकन्यका । श्रीसागानन्ददमना श्रीमज्जनकनन्दिनी ॥
सदाद्वैतस्वरूपा च सुकर्णा च सुकुण्डला । संभाषकारिणी श्वासा चातुरी शान्तरोहिणी ॥
संरावती सरोन्मादा सरावणा निकन्दिनी । सहस्राननधाती च सपट्टिशकरायुधा ॥
संक्रों कालि स्वरूपस्था सल्हौं भेदस्वरूपिणी । सग्लौं पञ्चास्त्ररूपस्था साध्वं पञ्चस्वरूपिणी ॥

त्वं पञ्चमुद्राधिगता सच्छीघ्रश्च मधुव्रता । सनातन प्रेतसंस्था स पञ्चामृत भक्षिणी ॥
सकौलिक गृहान्तस्था सवामा च सदक्षिणा । स पञ्चबाणाव्यथिता सदादेव प्रसादिनी ॥
सघना च सुगन्धा च सतडित्कान्ति सन्निभा । सर्वकालमयी रूपा सबिम्बा शील लंघना ॥
सेन्द्रायुध समुत्कण्ठा सुराचार्यवरप्रदा । सुगन्धवल्ली कान्तस्था समुधा सान्द्रमालिका ॥
सत्यज्योति स्वरूपस्था सजुहोमित भाषिणी । शुनिसेफः ऋषिस्तुत्या श्वेतवर्णा समुज्वला ॥
श्रीकृष्णाङ्क निवासिनी शुभगा शुभमङ्गला । स्नानोदकप्रिया स्नाता समुद्रा सिन्धुवासिनी ॥
सच्छिष्य बोधिनी शिष्या शतजन्मा शताकृतिः । सद्वनाश्रित पादाब्जा सदानन्दविहारिणी ॥
सर्वतीर्थाऽवगाहिनी संक्षोभन सच्चक्रका । श्रीं ह्रीं क्रीं भैरवीसाद्या श्रीं क्रीं ह्रीं ह्रूं समन्विता ॥
शब्दब्रह्म समुत्पन्ना शङ्करोत्पत्तिकारिणी । शत्रुनाशा शत्रुदाता शत्रुनाशनतत्परा ॥
श्रीं ह्रीं स्रीं शुक्लभैरवी शुं शुं शक्तिस्वरूपिणी । शालाक्षी शालरूपा च शालपानपरायणा ॥
शूं शूं शूं गतिस्वरूपिणी सकाराक्षरभूषिता । शीघ्ररूपा च शीघ्रा च शीघ्रतत्त्वविमोहिनी ॥
शूकरस्था शूकरेज्या शूकराकृतिलालसा । शत्रोरशनसन्तुष्टा शैलस्नेह प्रियङ्करी ॥
शमीपूजारतप्रीता शान्तिस्तोत्र परायणी । शववाहनसन्तुष्टा शवरूपा शवेश्वरी ॥
श्रीमद्रूपा च सद्बाला शेषचण्डपरायणा । श्रीगुणा श्रीशरन्माया शारदानन्दकारिणी ॥
श्रीपार्वति शक्तिमेधा श्रीकमला च सुगर्भिणी । शीतोष्मसम दुःखघ्नी शिवमुद्रा प्रदर्शिनी ॥
सुकाली सुतारा च सुछिन्ना च सुसुन्दरी । श्रीमद्भुवनेश्वरी च श्री श्रीमाया च सुसिद्धिदा ॥
श्रीबगला श्रीधूमा श्रीमहालक्ष्मी च शालिका । स्वकीयार्चनसन्तुष्टा शिवावलिप्रियात्मिका ॥
सुरम्या चित्रकूटस्था सुदर्शनसहायिनी । सभयाऽभीष्ट वरदा सक्रोधा सभयङ्करी ॥
सुग्रीवादि हरिस्तुत्या सुष्ठुग्रीवा सुसागरा । सप्तपातालचरणा सप्तालप्रभेदिनी ॥
सुरक्तमणिभूषाङ्गी शुम्भासुरनिकृन्तिनी । शुद्धस्फटिकसंकाशा सुताम्बूलधरप्रिया ॥
सुसर्वज्ञा सर्वशवित सर्वैश्वर्यप्रदायिनी । सर्वश्रीशाङ्करी सर्वोन्मादिनी च महांकुशा ॥
सां सी सर्वाशपूरणी श्रैं श्रैं श्रैं श्रीचक्रस्वामिनी । शापानुग्रहसामर्थ्या स्वचक्रायुध रक्षिणी ॥
सगरात्मजसन्दग्धा शुक्रकर्त्री च सप्तमी । संवत्सरप्रिया षष्ठी सत्यगृहस्वरूपिणी ॥
सुसत्य सरितस्नाता सरितानांशिरोमणिः । सहजानन्दलहरी स्वर्णाकर्षणभैरवी ॥
सुभोजन प्रीतिचित्ता षड्रसस्वादनप्रिया । सौधात्मिका सौधरूपा सुसौधा सैन्धवप्रिया ॥
शोधना शोधकृत् सौधा शोधनप्रियमानसा । सुदृष्टिश्च सुलज्जा च सुभ्रुनासा समौक्तिका ॥

सुबाहुमददर्पघ्नी सूर्यघ्नी खर्यकृन्तनी । सर्वप्रयोगकुशला सर्वस्तम्भनकारिणी ॥१७५॥
शुश्रूपालन सन्तुष्टा शुश्रूषेपा शुश्रुप्रिया । सुदामादुःखसंहर्त्री सुभद्राशोकनाशिनी ॥१७६॥
शत्रुप्रतिज्ञापहृता सहदेवप्रियङ्करी । शक्ति कल्याणदात्री च शक्तवैरी विनाशिनी ॥१७७॥
श्रीकूर्चबीजसहिता शशिविघ्नविनाशिनी । श्रीं क्लीं विघ्नविनाशिन्यै शन्तुभोग परायणा ॥
सम्पूर्णचन्द्रवदना शोकमार्गविनाशिनी । शत्रूच्चाटनमार्गस्था शत्रुमोहनकारिणी ॥१७९॥
भृङ्गीवादनसन्तुष्टा सारात्सारतरास्मृता । सारस्वतमुनिस्तुल्या साधिताऽखिल वैभवा ॥१८०॥
सुपुष्पिता सुवेलाद्रिसमीपा सर्वकामिनी । सर्वभूतान्तनिरता श्लोकतत्त्वार्थदर्शिनी ॥१८१॥
संजयप्रियकर्त्री च सुयोधनवधोद्यता । सर्वभूतपतिस्स्तुत्या सात्विकी सर्वरक्षिणी ॥१८२॥
सामीप्यफलदायी च सारूप्यफलभोगिनी । सालोक्यफलसिद्ध्यर्था सायुज्यपददायिनी ॥१८३॥

अथफल श्रुतिः—

इति ते कथितं देवि ! दिव्यनामसहस्रकम् । सीतादेव्याः परं गुह्यं महापातकनाशनम् ॥१८४॥
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां संक्रान्तौ मङ्गलेदिने । अमायां च तथा रात्रौ नवम्यां च शुभेदिने ॥१८५॥
पूजाकाले व्यतीपाते सन्ध्ययोरुभयोरपि । यः पठेद् पाठयेद् वापि शृणोति श्रावयेदपि ॥१८६॥
लभते गाणपत्यं सः यः पठेत् साधकोत्तमः । सर्वपापविनिर्मुक्तः सयाति परमांगतिम् ॥१८७॥
श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि यः कश्चिन्मानवः पठेत् । दुर्गतिं तरते घोरां सयाति विष्णुमन्दिरम् ॥१८८॥
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याङ्गना । स्तुत्वा स्तोत्रमिदं पुत्राँल्लभते चिरजीविनः ॥
यं यं चिन्तयते कामी पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम् । सीता वरप्रसादेन तं तं प्राप्नोति मानवः ॥१९१॥
पञ्चोपचारैं नैवेद्यं वलिभिर्बहुशोभितैः । धूप दीपैर्महादेवीं पूजयित्वा मनोरमे ॥१९२॥
षडक्षरं महामन्त्रं यद्वा लक्ष पठेत्सुधी । अनन्यचेता स्थिरधीर्विशुद्धासन संस्थितः ॥१९३॥
वायुतुल्य बलो लोके दुर्जयः शत्रुमर्दनः । सर्वविद्यावतां श्रेष्ठो धनेन च धनाधिपः ॥१९४॥
सर्वसंकटमुत्तीर्णः सर्वसिद्धिसमन्वितः । श्रीसीतोत्कृष्टदेव्याश्च सेव्यमानोस्मरोपमः ॥१९५॥

हे देवि ! यह श्रीसीता देवी का गुप्त तथा महापातक नष्ट करने वाला सहस्रनाम स्तोत्र मैंने तुमसे कहा है, अष्टमी को-चतुर्दशी-संक्रान्ति-मङ्गलवार-अमावस को तथा नवमी के शुभ दिन में रात्रि में पवित्र होकर पाठ करे अथवा व्यतीपात के दिन तथा प्रातः साय संध्याकाल में जो पढ़ता है-पढ़ाता है-सुनता है-सुनाता है, वह श्रेष्ठ साधक सभी पापों से मुक्त होकर परमगति को प्राप्त करता है । श्रद्धा से अश्रद्धा से जो कोई मानव इसका पाठ करे तो

वह घोर दुर्गति से तरकर प्रभु के वैकुण्ठ में जाता है वन्ध्या (जिसको कभी सन्तान न हुआ हो) काक वन्ध्या (जिसके एकबार सन्तान होकर फिर वन्ध्या हो गई हो) मृतवत्सा (जिसके सन्तान मर जाते हों) ऐसी स्त्रियां इस स्तोत्र का पवित्र श्रीवैष्णव विप्र के मुख से श्रवण करके उसकी प्रसंसा करे अथवा स्वयं पाठ करे तो उसको चिरंजीवी पुत्र प्राप्त होता है। जिस जिस वस्तु की कामना से इस सर्वोत्तम स्तोत्र का पाठ किया जाय वह सब वस्तु मनुष्य श्री सीता जी की प्रसन्नता से प्राप्त करता है। पञ्चोपचार पूजन करके श्रीसीता देवी को बहुत सुन्दर खूब नैवेद्य भोग धरावे। धूप-दीप-पंक्वान्न समर्पण श्रीफल बलि आदि मनोहर पदार्थों से महादेवी की पूजा कर उनके षडक्षर मूल मन्त्र का सुधी भक्त साधक एक लाख जप करे। अनन्य निष्ठा से एक आसन से विशुद्ध भावना से जो यह अनुष्ठान करे तो वह पवन के समान बलवान होता है, शत्रुओं का मर्दन करता है. उसको कोई जीत नहीं सकता है. विद्वानो में सर्वश्रेष्ठ बनता है. धनवानों में कुबेर तुल्य हो जाता है। श्रेष्ठ संकटों को पार कर सर्व सिद्धियों से सम्पन्न हो जाता है. सर्वोत्कृष्ट श्रीसीता देवी का उपासक सौन्दर्य में कामदेव के समान हो जाता हैं। (श्लोक १८४ से १९५)

महेशवद्भयोगीन्द्रः भूतैःसह प्रपूजितः। कामतुल्यस्वरूपोऽसौ सर्वाकर्षणकारकः॥
सूर्येन्दुजलवायूनां स्तम्भको राजवल्लभः। यशस्वी सत्कविर्धीमान् समन्त्री कोकिलस्वरः॥
बहुपुत्रो जगत्स्वामी नरेशोधार्मिकः सुखी। मार्कण्डेय इवायुष्मान् जरापलितवर्जितः॥
नवयौवनयुक्तः स्यादपिवर्षसहस्रभाक्। बहु किं कथनात्तस्य पठेत्स्तवमनुत्तनम्॥
न किञ्चिद् दुर्लभंलोके यद्यद्मनसि वर्तते। तत्सर्वं स्वल्पकालेन भविष्यति वरानने॥
सुरापानं ब्रह्महत्या स्तेयं गुर्वङ्गनागमः। सर्वमाशुतरत्येव स्तवस्यास्यप्रसादतः॥
स्तवेनानेनसंस्तुत्वा साधकः किन्नसाधयेत्। मूलमष्टोत्तरं जप्त्वा पठेन्नामसहस्रकम्॥

वह महेश्वर के समान भूतेश्वरों से पूजित योगीन्द्र पद प्राप्त करता हैं, काम के समान स्वरूपवान् होकर सभी का आकर्षण कर सकता है. सूर्य-जल तथा पवन के अनिष्ट प्रभाव को रोक सकता है. वह यशस्वी-सत्कवि-बुद्धिमान-मन्त्रज्ञ-विचारक-निर्णायक-नरेश-धार्मिक-सुखी प्रजा का स्वामी-तथा पुत्र-पौत्रवान् होता है. वृद्धावस्था तथा रोग रहित स्वस्थ रहता है. मार्कण्डेय के समान दीर्घायु होता है. हजारों वर्ष नव यौवन सम्पन्न रह सकता है. बहुत क्या कहें जो इस सर्वोत्तम स्तोत्र का पाठ करता है उसको संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। हे सुन्दर श्रेष्ठ मुख वाली पार्वती ! वह जो मन में इच्छा करता है वह शीघ्र ही अनायास प्राप्त करता है। ब्रह्महत्या-सुरापान-गुरुपत्नी गमन जैसे महापापों से वह इस स्तोत्र पाठ की कृपा से शीघ्र मुक्त हो जाता है। इस स्तोत्र के साधन से साधक क्या सिद्धि प्राप्त नहीं करता है। मूल मन्त्र का अष्टोत्तरशत १०८ जप करके तब इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। (श्लोक १९६ से २०१)

दर्शनं च भवेदाशु देवगन्धर्वसेवितः । येन केन प्रकारेण सीताभक्तिः समन्वितः ॥२०३॥
स्तम्भयेदखिलान् कामान् राजानमपिमोहयेत् । परनिन्दा परद्रोह परवाद परायणाः ॥२०४॥
खलाय परतन्त्राय भ्रष्टाय च दुरात्मने । न देयं भक्तिहीनाय शिवद्रोहकराय च ॥२०५॥
रामभक्ति विहीनाय परदाररताय च । जपपूजाविहीनाय द्विज श्री निन्दकाय च ॥२०६॥
न स्तवंदर्शयेद्दिव्यं दर्शनाच्छिवहाभवेत् । कुलीनाय सुशीलाय रामभक्ति पराय च ॥२०७॥
वैष्णवाय विशुद्धाय भक्तेर्भक्ताय मन्त्रिणे । देयं सहस्रनामेदमश्वमेधफलं लभेत् ॥२०८॥
देव्यैनिवेर्दितं यत्–तत् तस्यांशं भक्षयेन्नरः । दिव्यदेहधरोभूत्वा देव्याः पार्श्वचरोभवेत् ॥२०९॥
नैवेद्यनिन्दकं दृष्ट्वा नृत्यन्तियोगिनीगणाः । रक्तपानोद्यतासर्वा मांसास्थिचर्मणोद्यताः ॥२१०॥
तस्यै निवेदितं देव्यै दृष्ट्वा स्तुत्वा च मानवम् । न निन्देन्मनसावाचा सर्वव्याधिपराङ्मुखः ॥
यस्यालयेतिष्ठतिनूनमेतत् स्तोत्रं सुरम्यं लिखितं विधिज्ञैः ।
गोरोचनालङ्कृत कुंकुमाक्तं कर्पूर सिन्दूर मदद्रवेन ॥२१२॥
न तत्र चौरस्य भयं न शत्रुतो न वाशने वह्नि न व्याधिभीतिः ।
उत्पातवार्तैरपि नात्रशङ्का लक्ष्मी स्वयं तत्र वसेदलोला ॥२१३॥

इति श्रीरुद्रयामले उमामहेश्वरसंवादे सकरादि श्रीसीतासहस्रनामस्तोत्रम्

॥ सम्पूर्णम् ॥

चाहे जिस प्रकार से श्रीसीता भक्ति सम्पन्न भक्तजन इस स्तोत्र का पाठ करेगा वह शीघ्र ही श्री जानकी जी का दर्शन प्राप्त कर देव–गन्धर्व पूजित हो जाता है । सभी कामनाओं को स्तम्भित कर सकता है, राजाओं को मोहित करता है । दूसरों को व्यर्थ कलंक लगाने वाले परनिन्दक–परद्रोही–परस्त्रीगामी शिव द्रोही–श्रीराम प्रेम रहित–पूजा पाठ भजन भाव से रहित–नित्य नियम मन्त्रानुष्ठान विमुख–साधु ब्राह्मण तथा स्त्री निन्दक को यह स्तोत्र नहीं दिखाना चाहिये । ऐसे लोगों को यह दिखलाने वाला शिवजी की हत्या का भागी अथवा अपने कल्याण कार्य का घातक होता है । जो कुलीन सत्कुलप्रसूत हो, सुशील हो, श्रीराम भक्ति परायण हो, वैष्णव हो, विशुद्ध सदाचारी हो, मन्त्रानुष्ठान परायण हो, ऐसे सुपात्र को यह "श्रीसीता सहस्रनाम" स्तोत्र प्रदान करेगा उसको अश्वमेध यज्ञ करने का फल मिलेगा । श्री सीता जी को भोग लगाया प्रसाद जो खाता है वह दिव्य देहधारी बनकर श्री जू की नित्य सेवा प्राप्त सहचर बनकर कृतार्थ हो जाता है । जो श्रीजानकीजी के नैवेद्य की निन्दा करता है उसका रक्त पान करने के लिये योगिनी गण नाचने लगते हैं । उसका मांस चमड़ा खींच लेना चाहते हैं । अतः श्री सीता जी को अर्पण किये गये प्रसाद को देखकर उसकी प्रसंसा स्तुति ही करनी चाहिये, निन्दा तो भूल कर भी मन वचन से कभी नहीं करनी चाहिये । इस नियम को

पालन करने वाला सर्व व्याधि से मुक्त होकर सदा सुखी रहता है। जिसके घर में सुन्दर रम्य अक्षरों में लिखा हुआ यह स्तोत्र रहता है तथा विधि जानने वाला भक्तजन केशर-कस्तूरी चन्दन-कपूर तथा सिन्दूर चढ़ाकर नित्य पूजन करता रहता है, उसके घर में कभी चोर का भय नहीं होता है, न कोई शत्रु का भय रहता है, बिजली (वज्रपात) अग्नि काण्ड आदि उपद्रवों का भय नहीं रहता है। उसका घर सर्वोपद्रव से रहित शंका भय मुक्त स्वयं श्रीलक्ष्मी जी का अविचल निवास स्थान बन जाता है। (श्लोक २०३ से २१३)

"यह श्रीरुद्रयामल तन्त्र का उमा महेश्वर संवादात्मक सकारादि "श्रीसीता सहस्रनाम स्तोत्र" सम्पूर्ण हुआ।

श्रीकमलाजी के द्वादश नाम

कमला–मान्दरी–पुण्या–हैमी–भूमिसुतासखी ।
कलिगङ्गाब्धिपत्नी च कामदा–पापहारिणी ॥ १ ॥
ज्ञानदा–मुक्तिदा चैव कर्मबन्ध विमोचिनी ।
इति द्वादशनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ॥ २ ॥
सर्वं सिद्धिमवाप्नोति सीतारामप्रियः सदा ।

१–श्रीकमलाजी २–मन्दराचल की पुत्री ३–पुण्यस्वरूपा ४–हिमालय निवासिनी ५–भूमिसुता श्रीसीताजी की प्रियसखी ६–कलिगङ्गा ७–समुद्र पत्नी ८–सर्वकामप्रदायिनी ९–पापहारिणी १०–ज्ञानप्रदायिनी ११–मुक्तिप्रदाता १२–कर्मबन्धन छुड़ाने वाली ये श्री कमला जी के द्वादश (बारह) नाम का प्रातःकाल में उठकर जो पाठ करता है, वह लोक में सभी प्रकार की श्रेष्ठ सिद्धियाँ प्राप्त कर श्रीसीतारामजी का परमप्रिय सदैव बना रहता है ॥

इति श्रीमेरुतन्त्रोक्त तथा बृहद्विष्णुपुराणोक्त श्रीमिथिलामाहात्म्यान्तर्गत श्रीकमला–द्वादशनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

❀ श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः ❀

श्रीसीता--प्रसन्नास्तु

॥ श्रीजानकी सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीलक्ष्मण उवाच ॥

देव देव जगन्नाथ कथयस्व महाप्रभो । नाम्नां सहस्रं जानक्याः श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥

॥ श्रीराम उवाच ॥

कथयामि भवत्प्रीत्या शृणु लक्ष्मण भक्तितः ॥ २ ॥

ॐ अस्य श्रीजानकीदेव्याः सहस्रनामस्तोत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । श्रीरामेश्वरी देवता । श्रीसीता बीजम् । श्रीहनुमान् शक्तिः । सर्वकामार्थसिद्धये श्रीजानकीप्रीतये जपे विनियोगः ॥

जानकी–कमला–विद्या–सिद्धविद्या–महात्मजा । निर्मला–भाविनी–भव्या सर्वमङ्गलरूपिणी ॥

कौलिनी कुलजा कान्ता अर्पणा भक्तवत्सला । सुकेशी चारुनेत्रा च देवदानव सेविता ॥

अतिगुप्ता सरोजाक्षी सकला सर्वरूपिणी । भक्तवश्या महोग्रा च सर्वतंत्र विशारदा ॥

धरात्मजा महात्मजा शब्दरूपा महोत्सवा । रामा च रमणी भद्रा यज्ञोत्सवविभूषिता ॥

चन्द्रवक्त्रा चकोराक्षी चारुनेत्रा सुलोचना । रघुनाथप्रिया देवी शारदाकुल भूषिता ॥

काकुत्स्थनायका भव्या श्रीमती विश्वरूपिणी । रामप्रिया रामरमा रामगोप्या च मुक्तिदा ॥

चतुर्वर्गप्रदा सौख्या सर्वपापविनाशिनी । वाराही वारुणी विद्या महाविद्या महेश्वरी ॥

सती सत्यवती धूम्रा- धवला धर्म्मरूपिणी । धर्म्मनिष्ठा धर्म्मभवा धर्म्मि धर्म्मानिषेविता ॥

बालिका युवती वृद्धा नित्या नित्यमयी तथा । गायत्री वेदमाता च सर्वसंकटतारिणी ॥

हिरण्यकणिका रक्ता भद्रा नीलसरस्वती । इन्द्रोपेन्द्रस्वरूपा च दिव्याम्बरविभूषणा ॥

जगन्माता जगद्धात्री जननी सर्वरूपिणी । पत्नीचामर केशी च कुन्ददन्ता सुनाशिका ॥

कुन्दोत्सवा कुन्दप्रिया कुन्दपुष्पमयी तथा । आग्नेयी वायवी ज्येष्ठा वारुणी वरुणप्रिया ॥

सर्वदिग्वर्णिता विद्या सर्वेषामुपकारिणी । बुद्धिर्मेधा प्रिया शक्तिस्तुष्टिः पुष्टिर्धृतिः क्षमाः ॥

अचला निश्चला लक्ष्मी श्रीपद्मा नगशायिनी । अनन्ता महती चित्ता ह्यर्चिता चिन्मया स्मृता ॥

रजोमयी ब्रह्मरूपा विष्णोर्माया महेश्वरी । सर्वतीर्थमयी देवी दैत्यदानवनाशिनी ॥
विरूपा विश्वरूपा च मृडानी मृडवल्लभा । कोटिचन्द्रप्रतीकाशा कोटिसूर्य्यसमप्रभा ॥
नदभव्या नदभवा नदोद्भव नदात्मिका । यन्त्ररूपा यन्त्रभवा यन्त्रः मन्त्रमयी तथा ॥
द्विपदा त्रिपदा गोत्रा चतुर्वर्णा च त्र्यक्षरी । वर्णेषु गोपिता गुप्ता अरण्या स्थिरनायिका ॥
स्थिरा च तीर्थरूपा च वेगिणी वेगरूपिणी । वेगात्मिका वेगधरा काश्यपी कमलेक्षणा ॥
शक्तिरूपा शक्तिधरा शक्त्यशक्तिविभेदिका । गुणा गुणमयीगम्या निर्गुणा सद्गुणान्विता ॥
गन्धर्वसेविता नन्दी पूर्णब्रह्मस्वरूपिणी । कात्यायनी जगद्धात्री स्थितिसंहारकारिणी ॥
रणेजया च मातंगी तन्वङ्गी कदलीप्रिया । प्रीतिमाना प्रीतिदात्री षड्वर्णा शिरभंजिका ॥
वेणुकान्ता वेणुभवा वीणावाद्यवशोभना । खण्डचन्द्रा पूर्णचन्द्रा सकला निष्कला तथा ॥
तेजस्वि मुखरा सौम्या निःशब्दा शब्दरूपिणी । सिंदूरारुणशक्ता च सिंदुरारुणभूषिता ॥
मेघस्वना च मेधा च वाहुदंडविशोभिता । जयध्वनि निरोधा च घर्घरा खगरूपिणी ॥
खगाख्या खगमान्या च तडिदाभा च भाति या । वज्ररूपा वज्रमयी वज्रतंत्रा च दुर्गमा ॥
कादम्बिनी रतीशा च चञ्चला विमला ध्रुवा । अस्त्ररूपा शस्त्ररूपा ह्यणिमा ध्रुव मण्डला ॥
तर्कविद्या वेदविद्या ज्योतिर्विद्या विशारदा । कालीकल्प कला सा च पाण्डुरूपा पराक्रमा ॥
नागकन्या नागमाता नागपत्नी फणात्मिका । सार्विनित्यकला निद्रा सुनिद्रा च सुचेतना ॥
सुशीला सर्परूपा च खर्वजंघा करात्मिका । दीर्घजंघा दीर्घरवा दीर्घनासा सुकर्णिका ॥
कर्णेनपूजिता छिन्ना छिन्नचन्द्रमयी तथा । अपदा बहुपादा च ज्ञानाज्ञानपरायणा ॥
गौरी पद्मा च कल्याणी उर्वशी ध्वजरूपिणी । पताकी केतकी चूर्णा दृढव्रतपरायणा ॥
तिलोत्तमा रोहिणी च बदरीकविभामिनी । मघा च भरिणी पूर्वायाचिका च पवित्रिका ॥
अपर्विका अपूर्वा च अपूर्वफल भूषिता । शंखिनी शंखहस्ता च चित्रहस्ता सुकोमला ॥
कोमला पत्ररूपा च गांधारी चपला कला । रुक्मिणी रुक्मरूपा च क्षुधातृष्णा जरातुरा ॥
अचित्या चिंतिता चिंतामनोज्ञा मनसिस्थिता । अंजना व्यंजना-व्यंजा यज्ञनीया जरान्विता ॥
अजरा निर्जरा जीर्णा जीर्णार्पित विभाविनी । कूर्मरूपा शूकरी च हरिणी मृगरूपिणी ॥
मृगनाभिक कस्तूरी कर्पूरागर कुंकुमा । रघुदेवरताशक्ता रघुदेवरता-प्रिया ॥
पौरन्दरी तथा विष्णोर्जाया माहेश्वरी परा । सर्वेषां जननी नित्या चार्वङ्गी जनकात्मजा ॥
महाविद्या महामाया महामोहा महोत्सवा । वैकुण्ठनाथपत्नी च विमलानन्त रूपिणी ॥

भागीरथी मनोबुद्धिर्नित्यानन्दमयी सदा । महाव्याधिहरा भीमा सर्वरोगापहारिणी ॥
शंखिनी चक्रिणी धात्री हस्तेपुस्तकधारिणी । संपदा च सदाचारा द्रौपदी द्रुपदात्मजा ॥
सतांसृष्टिकरी सौम्या दैत्यानांक्षयकारिणी । दैत्यप्राणहरा दात्री दया दामोदरप्रिया ॥
क्षांति क्षेमकरी बुद्धिभारती भयनाशिनी । तरुणी तारणी तीक्ष्णा तीक्ष्णदैत्यविनाशिनी ॥
दात्रीदानपरा दान्ता दुष्टदैत्यविनाशिनी । क्रिया क्रियावती हृष्टा तुष्टा पुष्टा तथोर्वसी ॥
वेदांगना वेदकन्या वेदमाता पुलोमजा । वरेण्या वरदा वाणी ज्ञानिनां ज्ञानदामला ॥
शीला शीलवती सूक्ष्मा सूक्ष्माकारवरप्रदा । सुखिनी सुखदात्री च सर्वसौख्यविवर्द्धिनी ॥
भृगुवंशसमुद्भूता भार्गवी भृगुवल्लभा । रक्ताम्बरधरा रामा रमणी सुरनायिका ॥
मोक्षदा शिवदा श्यामा योगध्यान परायणा । योगीश्वरी योगरूपा योगनिद्रा कृशोदरी ॥
अम्बा जाम्बवती चैव सत्यभामा मनोरथा । रौद्रा रौद्रस्वना रौद्री रौद्रदैत्यविनाशिनी ॥
कुमारी कौशुकी विद्या कामदैत्यविनाशिनी । रामपत्नी रामरता रामजाया महोदरी ॥
विष्णुपत्नी विष्णुभवा विष्णुजाया च शूलनी । मदनान्तक कांता च मदनान्तक वल्लभा ।
भूतभव्या भवा स्पृष्टा पाविनी परिपालिनी । अदृश्या व्यक्तिरूपा च दृश्या श्रेष्ठ विवर्द्धिनी ॥
अपांनिधिसमुद्भूता धारिणी च प्रतिष्ठिता । अच्युता प्रच्युता प्राणा प्राणदा च सुरेश्वरी ॥
उत्तरशोभना क्षेमा श्रीगर्भा परमेश्वरी । वरदा पुष्टदेहा च कामिनी कंजलोचना ॥
शरण्या वरदा प्रीता प्रीतानन्दस्वरूपिणी । पताकिनी दयारम्भा शूरसेनी सुरेश्वरी ॥
श्रीमती च शिवानन्दा त्रिशक्तिर्मोक्ष दायिनी । परापरकलाकान्ता शिशिराचलकन्यका ॥
इच्छाभोगवती धेनुः कामधेनुः कलावती । सुरमाता सुरश्रेष्ठा श्रेष्ठा प्राणेश्वरी स्थिरा ॥
वज्रायुधा वज्रहस्ता चण्डी चण्डपराक्रमा । तमोघ्नी धातुहन्त्री च प्रयतात्मा पतिव्रता ।
गौरी सुवर्णवर्णा च त्रि[illegible]संहारकारिणी । मेधाविनी महावीर्य्या हंसी संसार तारिणी ॥
एकानेकमहेज्या च सर्वलोकप्रकाशिनी । षट्चक्र भेदिनी रामा कायस्था कायवर्जिता ॥
प्रणतप्राणिनामार्त्तिहारिणी दैत्यनाशिनी । अजा च बहुवर्णा च पुरुषार्थप्रवर्तिनी ॥
गर्विता गुणसम्पन्ना नगजा खगवाहिनी । रक्ता नीला सिता श्यामा कृष्णा पीता च कुर्बुरा॥
क्षुधा तृष्णा जरा वृद्धा तरुणी करुणालया । चन्द्रानना महोग्रा च चारुमूर्द्ध जशोभिता ॥
कलाकाष्ठा मुहूर्त्ता च निमेषा कालरूपिणी । मानिनी माधवी मान्या माननीया महद्गुणा ॥
सुवर्ण रसना नाशा चक्षु स्पृशवती रसा । गन्धप्रिया सुगन्धा च मनोज्ञा च मनोगतिः ॥

हस्ता ज्येष्ठा मघा पुष्या धनिष्ठा पूर्वफाल्गुनी । मृगनाभि मृगाक्षी च कर्पूरामोदधारिणी ॥
मधु । श्रीर्माधवी वल्ली मधुमत्ता महोद्धता । रेवती रमणी चित्रा हेमहार विभूषणा ॥
रक्ताम्बरधराक्षी च रक्तपुष्पावतंसिनी । नवपुष्पात्मिका सा च पुष्पस्रजविभूषणा ॥
रक्ताम्बरधरा धीरा महास्वेता वसुप्रिया । नवपुष्पग्रहोपेता नवपुष्पोपशोभिता ॥
चन्द्रिका चन्द्रकान्तिश्च सूर्यकान्तिर्निशाकरी । विजया च जयंती च मोहिनी शत्रुनाशिनी ॥
मल्लिका हाररसिका बालग्रहविनाशिनी । कुमारी वसुपर्णा च भवानी पापनाशिनी ॥
लज्जा सरस्वती नन्दा दानवेन्द्रप्रसादिनी । चन्द्रमण्डल संकाशा ज्ञानानन्दप्रवर्द्धिनी ॥
रूपयौवनसम्पन्ना गुणशीलसमन्विता । गुणयौवनसम्पन्ना रूपयौवनशोभिता ॥
शीता शीतप्रिया स्वर्ग्या सकलात्रनदेवता । गुरुरूपधरा गुर्वा कालचक्रविनाशिनी ॥
अणिमादिगुणोपेता महामारी च शांतिदा । चतुः समुद्रशयना चतुर्वर्ग फलप्रदा ॥
सर्व कालोद्भवप्रीता सर्वकालोद्भवोद्भवा । अनादिनिधना पुष्टिर्वृ क्षमध्यनिवासिनी ॥
सर्वचक्रेश्वरी सत्री सर्वमंत्रफलप्रदा । सहस्रनयना प्राणा सहस्रनयनप्रिया ॥
सहस्रशीर्षा सुमना मन्दभा सर्वभंजिका । गीतनृत्यप्रिया कामा सन्तुष्टिर्धनदा सदा ॥
मायाधारी मणिरता मणिसम्मानतत्परा । माधवानन्ददा माध्वी यशोदानन्दवर्द्धिनी ॥
यज्ञप्रीता यज्ञमयी यज्ञकर्म्म विभूषणा । राज्ञी राजकुलेज्या च राजराजेश्वरी रमा ॥
रमणी रामणी रामा रामानन्दप्रदायिनी । रजनीकरपूर्णाभा रक्तोत्पलविलोचना ॥
लांगलि प्रेमसन्तुष्टा लांगली प्रणयप्रिया । लावण्या च ललना लीला लीलावती लया ॥
लंकेश्वर गुणप्रीता लंकेशवरदायिनी । लवंगकुसुमप्रीता लवंगकुसुमप्रभा ॥
पुण्यदा पूर्णिमा पुण्या पुण्यकोटिफलप्रदा । पुराणा गोचरा पूर्वा पूर्वापाप विनाशिनी ॥
प्रह्लादहृदयाह्लादा रोहिणी पुण्यचारिणी । फलदा त्रिफला शक्ता फलदा त्रिविभूषिता ॥
वाणी वत्सलकारिणी वराङ्गी च वरानना । विष्णोर्वक्षस्थलस्था च मानिनी विन्ध्यगेहिनी ॥
धराधैर्यकरी धृष्टा धवलाम्भोजसन्निभा । तन्त्रधारी तन्त्रतारी तन्त्रकारी भयातुरा ॥
तपस्या तोलिनिस्तीर्णा दूर्वादल सुसेविता । कर्पूरागुरु वरदा कलानाथ समप्रभा ॥
कलाकेलिप्रिया कीर्णा कुंजरेश्वर गामिनी । खर्वा च खंजनद्वन्द्व लोचनाभ्यां विभूषिता ॥
खद्योतइवदुर्लक्षा खद्योतइवचंचला । चलच्चकोरनयना चलत्खंजनलोचना ॥
चतुर्वेदमयी रूपा चतुर्वर्णमयीमता । जगन्नाथप्रिया जीवा जगन्नाथरता जवा ॥

जामातृवरदा जंभा यमलार्ज्जुनधारिणी । तपसा तौलिनी तीर्णा पूर्णानन्दमयी सदा ॥
तारस्वरेणसहिता तारस्वरविभूषिता । वंशध्वजा वंशरूपा नन्दिनी कुलमध्यमा ॥
पाटकारा प्राणवृन्दा यत्नपातकनाशिनी । अधः स्थिता च पाताला अधोभुवन गामिनी ॥
अतला वितला तीर्णा सुतला नगशायिनी । द्विजिह्वा बहुजिह्वा च रसना सुरसेविता ॥
शून्यारण्या वरेण्या च वरिष्ठा पर्वगोचरा । प्रतिपर्वस्थिता देवी तिथीश्वर विभूषिता ॥
प्रतिमा नवमी चैव युगाद्या चक्ररूपिणी । ग्रहग्रस्ता बाहुभरा बहुसूर्यसमन्विता ॥
चन्द्रज्योत्स्ना च राका या राकेशा च चराचरा । नागरी नागरा ज्येष्ठा नागराजसुतानवा ॥
नवीनेन्दुकला नन्दी नन्दिकेश्वरपूजिता । नीरजाक्षी चंचलाक्षी नीरजद्वलोचना ॥
नीरप्रसूता नीरभवा नीरनिर्मलदेहिनी । नवीनकेतकी कुन्दा माकुन्द स्रग्विभूषिता ॥
नायका नन्दनिलया नायकानन्दकारिणी । नर्मकर्मरता नित्या नर्मकर्मपरायणी ॥
नर्मप्रिया नर्मरता नर्मध्यानपरायणा । नर्मकर्मैकसहिता नर्मकर्मैकपालिका ॥
नवनारी गुणप्रीता नवनारी वरप्रदा । नारायण प्रियाकान्ता निष्कला परमा कला ॥
नारायणप्रियादेवी नारायण समन्विता । नारायणसमायुक्ता सत्यभामा दृढव्रता ॥
चतुःसागर मध्यस्था चतुः सागर भूषिणी । वासुदेवरता विश्वा विज्ञा विज्ञानकारिणी ॥
वीणावती कलाकीर्णा बालपीयूष रोचिषा । बालवसुमतिर्विद्या विद्याहारविभूषिता ॥
विद्यावती वैद्यपदा सीता चैव सुतावली । भीतिदा भयहा भानोरंशुजालसमप्रभा ॥
सर्वा सर्वाणि सुमना सुभद्रा भद्रिका तथा । विनता संकरो शांता मनीषा मानरूपिणी ॥
मधुध्याता मनुज्ञता मानसी मनुचिन्तका । सदा गोप्या जपरता जपस्तुत्यादिभूषिता ॥
मरीचि मालिनी शुभ्रा हेमा हेमवती शिवा । सुगन्धा गंधरहिता आमुख्या क्षीवरूपिणी ॥
क्षीररसा क्षीरस्रवा क्षीरिका श्रीहरिप्रिया । बीजमयी बीजरूपा बीजोद्भवमबीजिका ॥
द्वारा द्वारवती ध्वान्ताप्रचण्डा चण्डमालिनी । कल्याणी कमलाकारा कलाकालस्वरूपिणी ॥
कामाक्षी कामदा काम्या कामना चारुरूपिणी । कालरात्रि संहरात्रिः कौलिनी कल्परूपिणी ॥
कुमारी करुणाकीर्ति कलिकल्मष नाशिनी । कात्यायनी कलाधारा कौमुदी कमलप्रिया ॥
महेश्वरी महामाया महातेजा महेश्वरी । महाज्योतिर्महामूर्त्ति महासुरविनाशिनी ॥
महामाया महावीर्य्या महापातकनाशिनी । महामखा मन्त्रमयी मणिपूरक वासिनी ॥
मनसा मान्यदा मान्या रामचक्षुरगोचरा । गणमाता च गायत्री गन्धर्व गणसेविता ॥

सिद्धा यज्ञप्रिया शक्तिर्यज्ञांगी यज्ञवर्तिका । यज्ञरूपा यज्ञभवा याज्ञी यज्ञकृतालया ॥
जालन्धरी जगन्माता जातवेदा जगत्पिता । जितेन्द्रिया जितक्रोधा जननी जयवादिनी ॥
गङ्गा गोदावरी रेवा गौतमीं च शतद्रुका । सिंधुर्मन्दाकिनी सिद्धा यमुना च सरस्वती ॥
चन्द्रभागा विपाशा च गण्डकी विन्ध्यवासिनी । नर्म्मदा कमुकावेणी ग्रहिल्याचम्पकावती ॥
अयोध्या मथुरामाया काशीकाञ्ची ह्यवन्तिका । द्वारावती च तीर्थेशा महाकिल्बिषनाशिनी ॥
वैष्णवी विष्णुरूपा च विष्णुमाया स्वरूपिणी । शिवेश्वरी शिवाराध्या भवानी भवमोचनी॥
पुण्यं सहस्रनामेदं जानक्या शुविदुर्ल्लभम् । यः पठेत्प्रातरुत्थाय शुचिर्भूत्वा समाहितः ॥
यश्चापि शृणुयान्नित्यं नरोनिश्चल मानसः । एक कालं द्विकालं च त्रिकालं श्रद्धयान्वितः ॥
सर्वपाप विनिर्मुक्तो धनधान्य सुतान्वितः । तेजस्वी बलवान् शूरः शोकरोगविवर्जितः ॥
यशश्वी कीर्तिमान् धन्यः सुभगोलोकपूजितः । रूपवान् गुणसम्पन्नः प्रभावीर्य्यसमन्वितः ॥
श्रेयांसि लभतेनित्यं निश्चलां सुभवां श्रियम् । सर्व दुःखविनिर्मुक्तो लोभक्रोध विवर्जितः ॥
विद्यानां पारगोविप्रः क्षत्रियो विजयी भवेत् । वैश्यस्तु धनलाभाढ्यः शूद्रस्तु सुखमश्नुते ॥
पुत्रार्थी लभतेपुत्रान् धनार्थी लभते धनम् । इच्छाकामस्तु कामार्थी धर्मार्थी धर्म्ममक्षयम् ॥

॥ इति श्रीसिद्धेश्वर तन्त्रे श्रीजानकी सहस्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

स्तोत्र पाठ की महिमाः—

पृथिवी पर परमदुर्लभ "श्रीजकीसहस्रनामक" यह स्तोत्र पुण्य स्वरूप है, प्रातःकाल में पवित्र होकर जो कोई इसका शान्ति पूर्वक पाठ करता है, अथवा एकाग्रचित्त से जो श्रवण करता है, एकबार प्रातःकाल अथवा प्रातः सायं दो बार अथवा प्रातः सायं मध्यान्ह तीनोंकाल श्रद्धा पूवक इसका पाठ करता है वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है। धन-धान्य-पुत्र-पौत्र से सम्पन्न होकर सुखी रहता है, वह यशस्वी-कीर्तिमान्-लोकपूज्य-धन्य कृतार्थ तथा सुन्दर ऐश्वर्य सम्पन्न होता है। रूप-गुण-प्रभाव-पराक्रम संयुक्त नित्य ही कल्याणप्रद कार्य करता है, लोक में अविचल सुख सम्पत्ति पाता है, सभी दुःखों से छूट जाता है, काम-क्रोध-लोभ-ईर्षा द्वेषादि दुर्गुणों से मुक्त हो जाता है। ब्राह्मण विद्वान् बनता है क्षत्रिय संग्राम में विजय प्राप्त करता है वैश्य को नीति प्राप्त धन का अभ्युदय होता है, शूद्र सेवा का सुफल परम सुख पाताहै। पुत्रार्थीको पुत्र-धनार्थी को धन, कामार्थी को मनवाञ्छित कामना की पूर्ति हो जाती है तथा धर्मार्थी को अक्षय धर्म पुण्य प्राप्त होता है।

"यह श्रीसिद्धेश्वरतन्त्र का "श्रीजानकी सहस्रनाम" स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।"

श्री सभा कुंज

जानकी
शरण
देहरादून
२२/६/८८

जानकी
शरण देहरादून
रसिक दोउ निरतत रंग भरे।
रास कुंज में रास मंडल रचि, जनक लली रघु लाल हरे॥
अमित रूप धरि करि कछु चेटक, जुग जुग तिय मधि श्याम अरे॥
श्रीरास कुंज - श्रीमहारास लीला - १२